गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 217
दि. 08.12.2025,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

गोवा नाइट क्लब त्रासदी: चमक-दमक के बीच छिपी लापरवाही ने 25 ज़िंदगियाँ निगली, राज्य में मचा शोक और गुस्सा

(जीएनएस)। गोवा की रातें अक्सर खुशियों, संगीत और पर्यटकों की रौनक से जगमगाती हैं, लेकिन शनिवार की रात अरपोरा और पणजी के बीच स्थित 'बिर्च बाय रोमियो लेन' नाइट क्लब की दहशत भरी चीखों ने इस चमकते शहर की तस्वीर पलट दी। रात करीब साढ़े ग्यारह बजे क्लब के अंदर अचानक उठी आग की लपटें कुछ ही मिनटों में 25 लोगों की साँसें रोककर हमेशा के लिए बुझा गईं। तेज़ आवाज़ वाला संगीत, नाचती भीड़ और चमकदार रोशनी के बीच किसी ने सोचा भी नहीं था कि इलेक्ट्रिक पटाखों का एक शो मौत का ऐसा जाल बन जाएगा, जिससे निकलने का कोई रास्ता नहीं बचेगा।

भीड़ में अफरा-तफरी मची, लेकिन धुएँ के घने बादल ने सब कुछ ढक लिया। आग की शुरुआत इतनी तेज़ थी कि लोगों को दरवाज़े तक पहुँचने का मौका नहीं मिला। ज्यादातर लोग धुएँ में घुटकर गिर पड़े। फर्श पर गिरे मोबाइल, जली हुई मेज़ें, टूटे काँच और बाहर रोते परिजनों की चीखें इस हादसे को एक अंधेरे सच में बदलती रहीं।

मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत ने कहा कि जो हुआ वह "मानवीय लापरवाही और नियमों की घोर अनदेखी" का नतीजा है। जांच अधिकारियों ने शुरुआती निरीक्षण में पाया कि समारोह के लिए इस्तेमाल किए गए इलेक्ट्रिक पटाखों से चिंगारियाँ निकलीं, जो सीधे सजावट और अंदर रखी ज्वलनशील सामग्री से टकराईं, और देखते ही देखते क्लब आग के सैलाब में बदल गया। बताया गया कि क्लब में मौजूद भीड़ उसकी निर्धारित क्षमता से कहीं ज़्यादा थी और आपातकालीन निकास दरवाज़े भी या

तो अवरुद्ध थे या पर्याप्त नहीं थे।

सरकार ने तुरंत कार्रवाई करते हुए क्लब के चार मैनेजरों—राजीव मोदक, विवेक सिंह, राजवीर सिंघानिया और प्रियांशु ठाकुर—को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं क्लब के दोनों मालिक सौरभ और गौरव लूथरा के खिलाफ भी FIR दर्ज की गई है और उनकी तलाश जारी है। मुख्यमंत्री ने साफ कहा है कि "जिन अधिकारियों ने आँखें मूँदकर अनुमति दी, उन्हें भी बख्शा नहीं जाएगा।" मुख्य सचिव और DGP को ऐसे सभी अधिकारियों की पहचान कर सख्त कार्रवाई का निर्देश दिया गया है, जिनकी वजह से अवैध और असुरक्षित क्लब बिना किसी रोक-टोक के चल रहे थे।

राज्य सरकार ने इस हादसे की जांच के लिए विशेष समिति गठित की है जो एक हफ्ते में रिपोर्ट देगी। इसके अलावा गोवा के सभी नाइट क्लब, रेस्तराँ और भीड़भाड़ वाले स्थानों का सुरक्षा ऑडिट किया जाएगा। आने वाले दिनों में नई SOP और विस्तृत दिशानिर्देश लागू होंगे ताकि कोई भी क्लब नियमों से खिलवाड़ न कर सके।

इस त्रासदी में जान गंवाने वाले 25 लोगों के परिवारों के लिए 5 लाख रुपये का मुआवजा घोषित किया गया है। घायलों को 50 हजार रुपये दिए जाएंगे। सरकार सभी मृतकों के पार्थिव शरीर उनके घरों तक सम्मानपूर्वक पहुँचाने की ज़िम्मेदारी ले रही है।

फायर विभाग ने बताया कि शुरुआत में उन्हें सिर्फ दो शव मिले थे, लेकिन जब वे रसोई और स्टोरेज एरिया तक पहुँचे, तो वहाँ 23 और शव एक-दूसरे के ऊपर गिरे मिले—मानो अंतिम क्षणों में सभी ने एक ही दिशा में भागने की कोशिश की हो। यह दृश्य किसी भी दिल को दहला देने के लिए काफी था। देशभर से इस हादसे पर शोक जताया जा रहा है। परिजनों के चेहरे पर एक ही सवाल बार-बार उभरता है—अगर सुरक्षा व्यवस्था पुख्ता होती, अगर नियम लागू होते, अगर लालच और लापरवाही पर रोक होती, तो क्या ये 25 ज़िंदगियाँ बच सकती थीं?

गोवा की यह रात सिर्फ एक हादसा नहीं, बल्कि चेतावनी है कि मनोरंजन की दुनिया में सुरक्षा से बड़ा कोई आकर्षण नहीं हो सकता। सरकार अब कितनी सख्ती दिखाती है, यह आने वाले दिनों में सामने आएगा, लेकिन फिलहाल गोवा की हवा में रोशनी नहीं, सिर्फ धुएँ और खोई हुई धड़कनों का दर्द तैर रहा है।

इंडिगो की उड़ानें जमीन पर, सवाल आसमान में: हाई कोर्ट के FDTL नियमों की अनदेखी पर केंद्र सरकार का सख्त रवैया, जांच तेज

(जीएनएस)। नई दिल्ली के आसमान में पिछले कुछ दिनों से सिर्फ हवाई जहाज़ ही नहीं, बल्कि सवाल भी मंडरा रहे हैं—और इन सवालों के केंद्र में है देश की सबसे बड़ी निजी एयरलाइन इंडिगो। उड़ानों में देरी, रद्दीकरण, ग़ायब होता सामान, अचानक बढ़ा किराया और यात्रियों की लंबी कतारें यह अव्यवस्था सिर्फ तकनीकी नहीं, बल्कि अब न्यायालयी आदेशों की अवहेलना से जुड़ा प्रबंधन संकट बन गई है। इसी पृष्ठभूमि में केंद्रीय नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री मुरलीधर किसन मोहोल ने रविवार को स्पष्ट कहा कि इंडिगो ने दिल्ली हाई कोर्ट द्वारा स्वीकृत FDTL (फ़्लाइट ड्यूटी टाइम लिमिट) नियमों को गंभीरता से नहीं लिया, और इसी लापरवाही ने यात्रियों की परेशानी को चरम पर पहुंचा दिया।

अदालत के आदेश के अनुसार ड्यूटी अवधि 10 घंटे से घटाकर 8 घंटे की जानी थी—थके हुए पायलटों के सुरक्षित संचालन को सुनिश्चित करने के लिए यह बदलाव बेहद आवश्यक

माना गया था। सरकार ने भी एयरलाइंस से यह परिवर्तन दो चरणों में लागू करने को कहा था—1 जुलाई 2025 और 1 नवंबर 2025। लेकिन इंडिगो के भीतर इस आदेश और सरकारी निर्देशों को लेकर जो ढिलाई बरती गई, वह अब एयरलाइन को भारी पड़ती दिख रही है। सरकार ने सख्त कदम उठाते हुए DGCA को जांच के निर्देश दिए और हालात को संभालने के लिए चार सदस्यीय समिति गठित की गई है। साथ ही एक 24×7 नियंत्रण कक्ष भी सक्रिय हुआ है, जो उड़ान संचालन, देरी और यात्रियों की शिकायतों पर तुरंत निगरानी करेगा। DGCA ने इंडिगो के CEO को शो-कॉज नोटिस जारी कर 24 घंटे के भीतर विस्तृत उत्तर मांगा है। मंत्री मोहोल ने साफ शब्दों में कहा—"यात्रियों का गुस्सा जायज़ है, और जांच के बाद कड़ी कार्रवाई तय है।"

यात्रियों की बढ़ती परेशानियों के बीच सरकार ने किरायों पर भी लगाम लगाई है और नई किराया सीमा सूची जारी की है। रद्द उड़ानों पर पूर्ण धनवापसी और खोया सामान 48 घंटे के भीतर लौटाने के निर्देश अनिवार्य किए गए हैं। कई यात्रियों को घंटों बाद पता चला कि उनका सामान किसी और शहर पहुंच गया था, और अब सरकार इस स्थिति को "अस्वीकार्य" मान रही है।

दूसरी ओर, इंडिगो के भीतर अब संकट प्रबंधन मोड सक्रिय हो गया है। कंपनी के बोर्ड ने एक विशेष संकट प्रबंधन समूह (CMG) बनाया है, जिसकी कमान अनुभवी उद्योग विशेषज्ञों के हाथ में सौंपी गई है—विक्रम सिंह मेहता, ग्रेग सारेल्स्की, माइक व्हिटेकर, अमिताभ कांत और CEO पीटर एल्बर्स इस समूह का हिस्सा हैं। यह टीम लगातार समीक्षा बैठकों में प्रबंधन से अपडेट ले रही है और उड़ान संचालन को जल्द सामान्य करने की जिम्मेदारी निभा रही है।

कंपनी के प्रवक्ता ने कहा कि प्रभावित यात्रियों को पूर्ण रिफंड दिया जा रहा है और यदि कोई यात्री वैकल्पिक उड़ान चुनता है तो उस पर कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जाएगा। एयरलाइन ने यह भी स्वीकार किया कि मौजूदा स्थिति असामान्य है और इसे जल्दी नियंत्रण में लाना कंपनी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। लेकिन इन सभी घोषणाओं और जांचों के बाद भी बड़ा सवाल जस का तस है—क्या यह संकट इंडिगो के प्रबंधन की प्रणालीगत कमियों की ओर इशारा करता है, या यह भारतीय विमानन क्षेत्र में किसी बड़े सुधार की शुरुआत का संकेत है? यात्रियों की निगाहें अब सरकार की कार्रवाई और DGCA की जांच रिपोर्ट पर टिक गई हैं। फिलहाल, आसमान में उड़ानें थोड़ी कम, और एयरलाइंस पर नजरें ज्यादा हैं।

मधेश प्रदेश की राजनीति में फिर उथल-पुथल, एक माह में तीसरी बार मुख्यमंत्री का शपथग्रहण; कृष्णप्रसाद यादव ने संभाली कमान

(जीएनएस)। नेपाल के मधेश प्रदेश में जारी राजनीतिक अस्थिरता एक बार फिर नए मोड़ पर पहुँची, जब प्रदेश के नव–नियुक्त मुख्यमंत्री कृष्णप्रसाद यादव ने पद और गोपनीयता की शपथ लेकर प्रदेश सरकार की कमान संभाल ली। यह विडंबना है कि पिछले एक माह के भीतर यह तीसरी बार है, जब मधेश प्रदेश में मुख्यमंत्री पद का शपथग्रहण हुआ है, जिससे क्षेत्र की राजनीतिक संरचना में लगातार हो रही उठापटक और सत्ता समीकरणों के तेज़ी से बदलते स्वरूप का अंदाज़ मिलता है। नए मुख्यमंत्री को प्रदेश प्रमुख सुरेन्द्र लाभ कर्ण ने शपथ दिलाई, जिसके तुरंत बाद तीन सदस्यीय मंत्रिमंडल ने भी शपथ लेकर सरकार के प्रारंभिक ढाँचे को आकार दिया।

शपथ लेने वाले मंत्रियों में जनमत पार्टी के महेश यादव को वित्त विभाग सौंपा गया है, जबकि नेपाली कांग्रेस के जंगी लाल यादव और एकीकृत समाजवादी पार्टी के कनिष्क पटेल ने मंत्री के रूप में जिम्मेदारी ग्रहण की है। शपथ ग्रहण के बाद मुख्यमंत्री कृष्णप्रसाद यादव ने कहा कि वे आगामी 10 तारीख को प्रदेशसभा से विश्वास मत प्राप्त करेंगे ताकि सरकार को विधिवत मान्यता मिल सके और प्रशासनिक प्रक्रिया सुचारु रूप से आगे बढ़ सके। सत्ता पक्ष के सात दलीय गठबंधन की बैठक में तय हुआ कि विश्वास मत तीन दिन बाद ही लिया जाएगा, ताकि सभी दलों के बीच समन्वय और समर्थन में कोई कमी न रहे।

कृष्णप्रसाद यादव को नेपाली कांग्रेस की ओर से मुख्यमंत्री पद के लिए नामित किया गया और उन्हें एमाले को छोड़कर सात दलों द्वारा समर्थन मिला। उन्हें संविधान की धारा 168(2) के तहत मुख्यमंत्री नियुक्त किया गया है, जिसके अनुसार कोई भी नेता तब सरकार बना सकता है जब उसके पास प्रदेश सभा में बहुमत गठबंधन का समर्थन हो। यादव को कुल 77 सांसदों का समर्थन हासिल है, जिनमें कांग्रेस के 22, जनता समाजवादी पार्टी (जसपा) के 18, जनमत पार्टी के 12, माओवादी केंद्र के 9, लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी (लोसपा) के 8, एकीकृत समाजवादी के 7 और नागरिक उन्मुक्ति पार्टी के एक सदस्य का समर्थन शामिल है। यह गठबंधन मधेश प्रदेश की राजनीति में एक बड़ा शक्ति–केंद्र बनकर उभरा है, जिसने यादव के नेतृत्व को मजबूती दी है।

प्रदेश में पिछले कुछ महीनों से लगातार राजनीतिक अस्थिरता बनी हुई है। पहले मुख्यमंत्री सरोज कुमार यादव ने समर्थन संकट के कारण पद छोड़ा, फिर नई सरकार भी बहुमत साबित करने में असफल रही, जिसके चलते तीसरी बार सत्ता परिवर्तन की नौबत आई। इस अस्थिरता ने प्रदेश की विकास योजनाओं, प्रशासनिक कार्यों और नीति निर्माण की गति को प्रभावित किया है। अब जब कृष्णप्रसाद यादव नेतृत्व के केंद्र में हैं, उनसे उम्मीद है कि वे गठबंधन को स्थिर रखेंगे, प्रशासनिक कार्यों में तेजी लाएंगे और लंबे समय से उलझी राजनीतिक परिस्थितियों को स्थायी समाधान की ओर ले जाएंगे।

मधेश प्रदेश की जनता इस बार एक स्थिर सरकार की उम्मीद कर रही है, जो राजनीतिक उतार-चढ़ाव से आगे बढ़कर विकास, सुशासन और क्षेत्रीय मुद्दों को प्राथमिकता दे सके। अब नज़र विश्वास मत पर है, जो तय करेगा कि यह नई सरकार प्रदेश की राजनीतिक दिशा को कितनी मजबूती और स्थिरता प्रदान कर पाएगी।

ब्रिगेड मैदान में आस्था का महासागर उमड़ा, पाँच लाख लोगों ने एक स्वर में गीता पाठ कर रचा आध्यात्मिक इतिहास

(जीएनएस)। कोलकाता के ऐतिहासिक ब्रिगेड परेड मैदान ने रविवार को आध्यात्मिक ऊर्जा और धार्मिक समरसता का ऐसा दृश्य देखा, जैसा शहर ने पहले कभी नहीं देखा था। विशाल मैदान में पाँच लाख से अधिक लोग एकत्रित हुए और एक साथ बैठकर भगवद्गीता का पाठ किया। भीड़ का हर स्वर जब एक साथ उच्चारित श्लोकों में बदलता था, तो पूरा मैदान मानो एक विशाल यज्ञशाला में तब्दील हो जाता था। सनातन संस्कृति संसद द्वारा आयोजित इस विराट कार्यक्रम में देशभर से आए साधु-संतों और आध्यात्मिक गुरुओं की उपस्थिति ने माहौल को और भी दिव्य और गरिमामय बना दिया। प्रमुख रूप से कथावाचक धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री, साध्वी ऋतंभरा और स्वामी ज्ञानानंद की मौजूदगी ने श्रद्धालुओं में अतिरिक्त उत्साह भर दिया, जो सुबह से ही झुंडों में मैदान की ओर उमड़ रहे थे। कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल के राज्यपाल डॉ. सी.वी. आनंद बोस भी पहुंचे और उन्होंने मंच से समाज को एक महत्वपूर्ण संदेश दिया। उन्होंने कहा कि यह समय धार्मिक अहंकार को समाप्त कर आध्यात्मिकता की वास्तविक शक्ति को समझने का है—वह शक्ति जो मानवता, सद्भाव और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। राज्यपाल ने भ्रष्टाचार के अंत और धर्म की स्थापना की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने भगवद्गीता के प्रसिद्ध श्लोक "परित्राणाय साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे" का उल्लेख करते हुए कहा कि समाज तभी प्रगति कर सकता है जब उसमें सत्य और न्याय की स्थापना हो। आयोजन की तैयारी कई दिनों से चल रही थी। पूरे मैदान में तीन विशाल मंच बनाए गए थे, जहां से संतों और वक्ताओं ने कार्यक्रम का संचालन किया। भीड़ के पैमाने को देखते हुए सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद रखी गई थी। पुलिस और स्वयंसेवकों की बड़ी संख्या तैनात थी, जबकि चिकित्सा सहायता के लिए एम्बुलेंस, मोबाइल मेडिकल यूनिट और प्राथमिक उपचार केंद्र तैयार रखे गए थे। आयोजकों का कहना है कि यह पश्चिम बंगाल में अब तक का सबसे बड़ा सामूहिक गीता पाठ था, जिसका उद्देश्य केवल धार्मिक नहीं बल्कि सामाजिक भी था। स्वामी प्रदीप्तानंद महाराज ने कहा कि समाज में बढ़ रहे मतभेदों, विभाजन और तनाव के माहौल में आध्यात्मिक अभ्यास ही वह ताकत है जो लोगों को जोड़ सकता है और उन्हें सही दिशा प्रदान कर सकता है। उन्होंने कहा कि गीता का संदेश कोई धार्मिक बंधन नहीं, बल्कि जीवन का शाश्वत विज्ञान है, जो हर व्यक्ति के लिए मार्गदर्शक बन सकता है। धीरे-धीरे सुबह की ठंडी हवा गीता पाठ की गूंज से भर गई, और जब लाखों लोगों ने एक साथ अंतिम श्लोक का उच्चारण किया तो पूरा ब्रिगेड मैदान श्रद्धा और ऊर्जा का ऐसा केंद्र बन गया जिसे देखकर अनुभवी संत भी भावुक हो उठे। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित लोगों ने एक दूसरे को शांति, सद्भाव और करुणा का संदेश दिया। आयोजन की सफलता ने एक बार फिर कोलकाता को आध्यात्मिक परंपराओं का केंद्र साबित कर दिया और दिखा दिया कि जब समाज एकजुट होकर किसी सकारात्मक उद्देश्य के लिए खड़ा होता है, तो उसकी आवाज़ कितनी प्रभावशाली और अविस्मरणीय हो सकती है।

मध्य प्रदेश और मणिपुर में उग्रवाद पर दोहरी चोट, कुख्यात कमांडर कबीर समेत 10 माओवादी सरेंडर ; मणिपुर में 11 उग्रवादी कैडर धराए

(जीएनएस)। बालाघाट और इम्फाल से आई दो महत्वपूर्ण घटनाओं ने सुरक्षा एजेंसियों की नक्सलवाद और उग्रवाद के खिलाफ मुहिम को नई गति दे दी है, जहां मध्य प्रदेश के घने जंगलों में सक्रिय कुख्यात माओवादी कमांडर कबीर सहित 10 हथियारबंद माओवादियों ने पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, वहीं दूसरी ओर मणिपुर में सुरक्षा बलों और राज्य पुलिस के संयुक्त अभियान ने विभिन्न उग्रवादी संगठनों से जुड़े 11 कैडरों को गिरफ्तार कर घाटी क्षेत्रों में सक्रिय नेटवर्क को कमजोर करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। बालाघाट जिले में हुआ आत्मसमर्पण मिशन 2026 की उस व्यापक रणनीति का अहम हिस्सा माना जा रहा है, जिसके तहत राज्य को नक्सलवाद से पूरी तरह मुक्त करने का लक्ष्य तय किया गया है। विशेष रूप से कबीर जैसे वरिष्ठ और कुख्यात माओवादी कमांडर का हथियार डालना सुरक्षा बलों के लिए एक बड़ी उपलब्धि है, क्योंकि कबीर पर मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़—तीनों राज्यों में कुल 77 लाख रुपये का इनाम घोषित था। वह लंबे समय से जंगलों में सक्रिय माओवादी नेटवर्क का प्रमुख संचालक माना जाता था और संगठन के लिए भर्ती, हथियार प्रबंधन और फंडिंग जैसे अहम कामों को अंजाम देता था। पुलिस सूत्र बताते हैं कि पिछले कुछ महीनों में लगातार दबाव, जंगल क्षेत्रों में सुरक्षा बलों की मजबूत पैठ, स्थानीय सहयोग और संगठन के भीतर बढ़ती अव्यवस्था ने माओवादी कैडरों को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर किया है। पिछले दो महीनों में यह तीसरा बड़ा आत्मसमर्पण है। इससे पहले सुनीता और दर्रेकसा दलम के 11 माओवादी भी हथियार डाल चुके हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि केबी डिवीजन में माओवादियों की पकड़ पहले जितनी मजबूत नहीं रही और उनकी गतिविधियाँ लगातार कमजोर होती जा रही हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव स्वयं बालाघाट पहुंचकर पुलिस लाइन ग्राउंड में इन माओवादियों के औपचारिक आत्मसमर्पण कार्यक्रम में शामिल होंगे, जिसे सरकार मिशन 2026 की रणनीतिक जीत बताती है। अधिकारियों का स्पष्ट कहना है कि प्रदेश में नक्सलवाद को समाप्त करने की दिशा अब वापसी के बिंदु को पार कर चुकी है और यह आत्मसमर्पण उसी गति का परिणाम है। इसी दौरान पूर्वोत्तर में उग्रवाद से जूझ रहे मणिपुर में भी सुरक्षा बलों ने एक बड़ा अभियान चलाकर विभिन्न उग्रवादी संगठनों के 11 सक्रिय कैडरों को गिरफ्तार किया है। ये गिरफ्तारियाँ इम्फाल वेस्ट, थौबल, विष्णुपुर और काकचिंग जिलों में संयुक्त तलाशी अभियानों के दौरान हुईं, जहां लंबे समय से कई उग्रवादी समूह उगाही, हथियारों की आवाजाही और नेटवर्क विस्तार जैसी गतिविधियों में शामिल रहे हैं। गिरफ्तार किए गए कैडरों में जीऽ, केवाईकेएल, आरपीएफ/पीएलए, यूएनएलएफ और केसीपी जैसे कुख्यात संगठनों के सदस्य शामिल हैं, जिनके पास से मोबाइल फोन, सिम कार्ड, हथियार और वाहन सहित कई संदिग्ध सामग्री बरामद की गई है। अधिकारी इसे उग्रवादी नेटवर्क की आर्थिक और सामरिक रीढ़ पर प्रहार बताते हैं। सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि वसूली और अवैध फंडिंग उग्रवादी समूहों की जीवनरेखा होती है, और इन गिरफ्तारियों ने घाटी क्षेत्र में उनके नेटवर्क को बड़ी हद तक बाधित किया है। दोनों घटनाओं को मिलाकर देखें तो मध्य भारत और पूर्वोत्तर में एक ही दिन में हुई यह दोहरी सफलता देशभर में चल रहे उग्रवाद विरोधी अभियानों की प्रभावशीलता को दर्शाती है। एक ओर मध्य प्रदेश नक्सलवाद के प्रभाव को लगभग समाप्ति की ओर धकेल रहा है, वहीं मणिपुर राज्य अपने संवेदनशील क्षेत्रों में उग्रवादी गतिविधियों के विरुद्ध निर्णायक और आक्रामक रुख अपनाए हुए है। सुरक्षा एजेंसियों का कहना है कि इन कार्रवाइयों के बाद आने वाले महीनों में और भी महत्वपूर्ण परिणाम सामने आ सकते हैं, क्योंकि कई क्षेत्रों में उग्रवादी संगठनों की पारंपरिक पकड़ लगातार ढीली हो रही है और सुरक्षा बलों की कार्रवाई और तकनीकी निगरानी

संपादकीय

हिंद-रूस दोस्ती जिंदाबाद

भारत और रूस की दोस्ती सात दशक पुरानी है। दो दोस्तों ने, इतने लंबे वक्त तक, कई तूफ़ानों और इम्तिहानों के बावजूद, दोस्ती को बरकरार रखा है, यकीनन यह एक मिसाल है। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन भारत के प्रवास पर हैं। वह अपने साथ दोस्ती की नई पेशकशें और आयाम लेकर आए हैं। प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति पुतिन के 5 दिसंबर को शिखर, द्विपक्षीय संवाद के बाद जो साझा बयान जारी किया जाएगा और जिन समझौतों पर हस्ताक्षर किए जाएंगे, उनके बाद दोस्ती, सहयोग, समर्थन नई ऊंचाइयां छुएंगे। राष्ट्रपति पुतिन ने भी रूस से यात्रा आरंभ करने से पूर्व इसी आशय का बयान दिया था। दरअसल रूस भारत को ऐसे 'रणनीतिक साझेदार' के रूप में स्वीकार करना चाहता है, जिसकी साझेदारी असीम, निस्सीम अर्थात् सीमारहित हो। कोई सीमा नहीं, रूस और चीन की साझेदारी ऐसी है। रूस भारत को भी उन्हीं समीकरणों में देखना चाहता है। राष्ट्रपति पुतिन ने अपनी इच्छा फिर दोहराई है कि रूस, भारत, चीन को एक 'तिकड़ी' बन जाना चाहिए। वह 'तिकड़ी' अमरीका से मुकाबला करने में सक्षम और सशक्त साबित होगी। बेशक पुतिन की यह इच्छा विचारणीय है, क्योंकि रूस पर अकेले अमरीका ने ही करीब 6500 पाबंदियां थोप रखी हैं। रूस पर कुल 26,000 के करीब प्रतिबंध हैं। फिर भी रूस दबाव में नहीं है। उसका अस्तित्व यथावत है। उसकी अर्थव्यवस्था को ज्यादा धक्के नहीं लगे हैं। भारत और चीन ने रूस से कच्चा तेल खरीद कर उसकी आर्थिक मदद ही की है। हालांकि भारत ने अब यह खरीद एक-तिहाई कर दी है। कारण अमरीका का दबाव ही नहीं है। रूस यूक्रेन और परोक्ष रूप से अमरीका, यूरोप, नाटो देशों के खिलाफ लगातार युद्ध लड़ रहा है। रूस से कच्चा तेल लेने के कारण ही अमरीका ने भारत पर, जुर्माने के रूप में, 25 फीसदी अतिरिक्त टैरिफ थोपा था। भारत पर कुल टैरिफ 50 फीसदी है। अमरीका चीन को भी टैरिफ की धमकियां देता रहा है। बहरहाल रूस भारत को 'असीमित' रणनीतिक साझेदार के रूप में देखना चाहता है।

रूसी संसद ने 'रेलोस' समझौते को भी मंजूरी दी है। उसके तहत भारत रूस के एयरबेस, नौसेना पोर्ट, युद्धपोत, सैन्य बल एवं साजो सामान, फ्यूल, संसाधन आदि इस्तेमाल कर सकेगा। रूस के 5 युद्धपोत, 10 सैन्य विमान, 3000 सैनिक आगामी 5 साल के लिए भारतीय जमीन पर तैनात किए जा सकेंगे। भारत की इतनी ही सैन्य ताकत रूसी जमीन पर तैनात होगी। यह समझौता 'रेसिप्रोकल एक्सचेंज ऑफ लॉजिस्टिक सपोर्ट' (आरईएलओएस) है, जो रूसी संसद में पारित किया गया है। इससे भारत और रूस दो देश तो रहेंगे, लेकिन उनकी सैन्य-शक्ति 'एकाकार' हो जाएगी, जिसे सोच कर ही दुश्मन कांपने लगेगा। बेशक दुश्मन की शक्ति कमजोर पड़ेगी। यही नहीं, भारत-रूस के बीच 'नागरिक परमाणु करार' भी होगा। भारत का ऐसा करार सिर्फ अमरीका और फ्रांस के साथ है। रूस पहले ही भारत में 1000 मेगावाट प्रति के चार परमाणु रिएक्टर स्थापित करने की प्रक्रिया में है। इससे भारत में परमाणु ऊर्जा की क्षमता बढ़ेगी। भारत ने निजी निवेश के लिए भी यह क्षेत्र खोलने का निर्णय लिया है। महत्वपूर्ण यह भी है कि रूस सुखोई-57 जैसा पांचवीं पीढ़ी का लड़ाकू विमान भी भारत को मुहैया करना चाहता है और इसकी प्रौद्योगिकी भी देना चाहता है, ताकि इन लड़ाकू विमानों का उत्पादन भारत में ही किया जा सके। भारत अब एस-500 एंटी मिसाइल सिस्टम रूस से चाहता है, जबकि रूस ने ही हमें एस-400 प्रणाली दी थी। 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान एस-400 वायु रक्षा प्रणाली ने पाकिस्तान के एक भी हवाई हमले को कामयाब नहीं होने दिया। अब 'ब्रह्मोस' की अगली पीढ़ी का उत्पादन भारत में ही होगा, वह दोनों देशों का उपक्रम होगा। बहरहाल राष्ट्रपति पुतिन भारत में हैं, तो मोदी से बातचीत में कई मुद्दे उठेंगे।

जटिल दस्तावेजी प्रक्रिया से मुक्त हो एसआईआर

> अलग-अलग तरह के 'कागजात' बनवाने की जटिल प्रक्रिया जारी है जिनमें एक एसआईआर यानी वोटर लिस्ट का विशेष गहन पुनरीक्षण भी है। नागरिक जटिलताओं में फंसे हैं और बार-बार साबित करने को मजबूर हैं कि हम कौन हैं। आधुनिक राज्य हमारे मूलभूत इंसानी गुणों को बायोमेट्रिक्स और दस्तावेजों तक सीमित कर देता है।

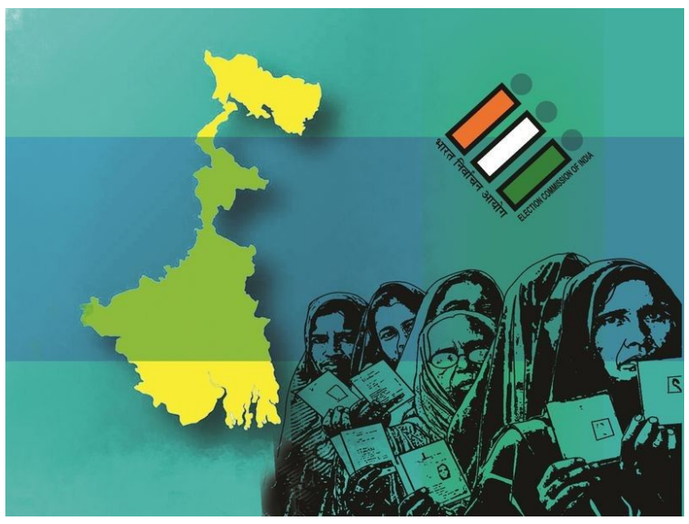

ऐसा लगता है कि चुनाव आयोग जिस ढंग से मतदाता सूचियों के विशेष सघन पुनरीक्षण करवा रहा है, उसमें जरूरी नहीं सब कुछ ठीक हो। असल में, जैसा कि पश्चिम बंगाल से आई खबरों से पता चलता है, इससे आम लोगों के साथ-साथ बूथ लेवल ऑफिसर्स (बीएलओ) में भी बहुत तनाव और चिंता पैदा हो रही है। काम के अत्यधिक दबाव की वजह से चार बीएलओ द्वारा आत्महत्या कर लेना सच में चिंता की बात है, लेकिन यह भी उतना ही ज़रूरी है कि आम नागरिक या शांति से रहने वाले लोग इस बात को लेकर बहुत परेशान हैं कि उन्हें किस तरह के दस्तावेज़ दिखाने होंगे ताकि उनका नाम संशोधित सूची से कटने न पाए। जैसा कि विरोधी पार्टियां आरोप लगा रही हैं, इस डर से अब तक 40 लोगों की मौत हो चुकी है। क्या ऐसा है कि विशेष सघन पुनरीक्षण कानून के ज़रिए सरकार हमसे यह साबित करने के लिए कह रही है कि हम भारतीय हैं, हमारे माता-पिता भारतीय हैं, और हम गैर-कानूनी अप्रवासी नहीं हैं? और खासकर पश्चिम बंगाल जैसे सीमावर्ती राज्यों में, यह अभियान एक नया रूप धर चुका है।

सोचिए यह मानसिक व्यग्रता कितनी संक्रामक है। हालांकि मैं दिल्ली में रहता हूं, फिर भी मैंने अपने सारे दस्तावेज़ सही क्रम से रखने शुरू कर दिए हैं : वो दस्तावेज जो यह साबित कर सकें कि मैं भारत में ही पैदा हुआ हूं, मेरे माता-पिता भारतीय थे, और मेरा नाम 2002 की वोटर लिस्ट में था। मेरे पिता एक सरकारी ऑफिसर थे। तीन दशक से ज़्यादा समय तक, मैंने एक सेंट्रल यूनिवर्सिटी में पढ़ाया। मुझे आज भी वह दिन याद है जब मैं आधार कार्ड बनवाने के लिए तमाम प्रमाणत्रों से (जैसे कि अपने घर का पता, जन्म तिथि और पिता के नाम) संबंधित अधिकारियों को संतुष्ट करने के बाद अपना आधार कार्ड बनवाने के लिए लंबी पंक्ति में खड़ा हुआ था। मेरा पैन कार्ड और आधार लिंक हैं। मैं नियमित रूप से आयकर भरता हूं। मेरे पास मेरा पासपोर्ट है। फिर भी, मैं गहरी चिंता से मुक्त नहीं हूं। कौन जानता है कि कल को सरकार मुझसे भी कह दे कि ये दस्तावेज़ काफी नहीं हैं? कल्पना कीजिये आधार की नियति के बारे में। यह हर जगह जरूरी है - बैंकों में, हवाई अड्डे में, स्कूलों में, अस्पतालों में और यहां तक कि श्मशान घाटों में भी। लेकिन अब हमें बताया गया कि आधार कार्ड नागरिकता का सुबूत नहीं है। और हमें यह भी बताया जाता है कि अगर आपके पास मतदाता फोटो पहचान पत्र तो है, लेकिन किसी अनजान वजह से आपका नाम 2002 की वोटर सूची में नहीं है, तब आप मुश्किल में पड़ जाएंगे। सच में, मैं परेशान हूं। अगर मेरे जैसा सर्व सुविधा संपन्न व्यक्ति इस चिंता और असुरक्षा की भावना से बच नहीं सका, तो सोचिए कि एक प्रवासी मज़दूर, कोई ट्रांसजेंडर व्यक्ति, झुग्गी में रहने वाला, या एक आम किसान किस विकट स्थिति से गुज़र रहा होगा।

हालांकि, यह सिर्फ़ मेरी, या आपकी चिंता की बात नहीं है। असल में, यदि हम और गहराई में उतरना गवारा करें तो, हमें आधुनिक राष्ट्र की प्रवृत्ति को समझना होगा, जो आज़ादी और मानवाधिकारों की ललित कथाओं के बावजूद, अपने नागरिकों पर निगरानी रखने का सामान्यीकरण करते हुए, रोज़मर्रा की ज़िंदगी में निरंतर दस्तावेजों की मांग के ज़रिए पूर्ण नियंत्रण बनाना चाहती है। कोई हैरानी नहीं कि आम नागरिक होने के नाते, हम लगातार डर के कभी न खत्म होने वाले चक्र में फंसे रहते हैं। 'कागज' पूरे करने को हमें एक दफ्तर से दूसरे दफ्तर भागने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। कल तक, यह आधार था; जो लगभग आपके शरीर के एक ज़रूरी अंग जैसा था; और इसके बिना, आप कुछ भी नहीं थे! इसके अलावा, तकनीक के विकास के साथ, आपका ईमेल एड्रेस या आपका मोबाइल फ़ोन नंबर आपकी पहचान बन चुका है। इसे आपके आधार, पैन और बैंक अकाउंट से लिंक होना चाहिए। कल्पना करें आपने अपना स्मार्ट फ़ोन खो दिया है और तब आपको तीव्र चिंता सताने लगती है। यह महज आपका फ़ोन खोना नहीं है; यह आपकी पहचान गुम होने जैसा है; वह अनुभव दुनिया से कट जाने की तरह है। इसके अलावा, ऐसा लगता है कि अब कुछ भी निजीपन या निजता नहीं रही। डेटा साइंस के इस ज़माने में आपका ईमेल एड्रेस या आपका मोबाइल फ़ोन नंबर हर जगह पहुंच चुका है। आपकी हर हरकत पर लगातार नज़र रखी जा रही है और उसे देखा जा रहा है। इसलिए, क्या यह हैरानी की बात नहीं कि आपको और मुझे हर दिन प्रॉपर्टी डीलरों से लेकर फ़ाइनेंशियल एक्सपर्ट्स और यहां तक कि प्रधानमंत्री के दफ़्तर से भी तरह-तरह के मैसेज मिलते रहते हैं? इस निगरानी मशीनरी का हिस्सा बनना कोई अच्छा अहसास नहीं है। यह डर, तनाव और चिंता को बढ़ाता है। यह आपके निजी दायरे में दखलअंदाजी है।

असल में, यह काम आपकी इंसानी रूह को एक बायोमेट्रिक्स में परिवर्तित कर देने, या आपकी पहचान के प्रमाण को, चाहे वह आपका राशन कार्ड हो, आपका पासपोर्ट या फिर आपके घर का पता साबित करने वाला कोई यूटिलिटी बिल हो- हर उस चीज़ को बहुत नुकसान पहुंचाता है जो हमें इंसान बनाती है- खुद को भरोसे योग्य समझे जाने से बनता अहसास। यह एक सिविल सोसाइटी की भावना को ही खत्म कर देता है। कल्पना करें, मैं पश्चिम बंगाल में अपने गृहनगर में एक अल्पसंख्यक पड़ोसी को जानता हूं। मुझे पता है कि उसके माता-पिता/दादा-दादी यहीं पैदा हुए थे। लेकिन फिर, पता नहीं किन्हीं कारणों से, 2002 की वोटर लिस्ट में वह अपना नाम नहीं पाता। सरकार को उस पर शक होने लगता है; और जो लोग साम्प्रदायिक राजनीति के कीटाणु को ज़िंदा रखना चाहते हैं, वे आरोप लगाने लगेंगे कि वह बांग्लादेश से आया एक अवैध प्रवासी है। एक ऐसी सरकार के लिए जो सिविल सोसाइटी के फैसले से ज़्यादा तथाकथित वैध 'कागजों' पर विश्वास करती हो, वहां आपके और मेरे विचार शायद ही मायने रखते हैं। टेक्नो-अथॉरिटेरियनिज़्म और क्या होता है- इंसानी अनुभव की हकीकत पर 'कागजों' का हावी होना?

कदाचित्, हमें एक किस्म की आज़ादी-दायक राजनीतिक संस्कृति और शिक्षा की ज़रूरत है ताकि हम निगरानी और दस्तावेजों का सामान्यीकरण करने, या इंसानी पहचान को 'आधिकारिक रूप से मान्य' पहचान प्रमाण में तब्दील किए जाने का विरोध कर सकें। हमें सामाजिक जीवन की जीवनदायिनी शक्ति, सिविल सोसायटी की जीवंतता, और संवाद में तार्किकता के जादुई अहसास को वापस लाना और उसका मोल समझना होगा।

यही समय है कि हमें इसका अहसास हो। नहीं तो, हम डर और व्यग्रता में जीने लगेंगे; हम हर किसी पर शक करने लगेंगे; हम खुद पर भी शक करने लगेंगे; और तो और मौत के समय भी, हमारी कोशिश होगी कि तमाम 'दस्तावेज' ठीक हों ताकि एक 'आधिकारिक' मृत्यु प्रमाणपत्र जारी किया जा सके!

प्रेरणा

"सच का महा समारोह"

जिला मैदान में आज कुछ अलग ही चमक थी। दूर से ऐसा लगता था जैसे कोई भव्य मेला लगा हो, जहाँ रंगीन झंडियाँ हवा में नाच रही हों और लाउडस्पीकरों से सूक्तियाँ बह रही हों—लेकिन यह कोई मेला नहीं था, बल्कि देश का पहला "सच का महा समारोह" था, जिसमें वही लोग शामिल थे जिनके नाम सुनकर आम जनता का दिल धड़कता था और ईमानदारी खुद को आईने में देखने चल पड़ती थी। सुबह से ही पुलिस, मीडिया, एनजीओ, और विभिन्न विभागों के वाहनों की भीड़ लगी थी। हर गाड़ी पर चमकदार बैनर—"सत्य सर्वोपरि", "ईमानदारी हमारा लक्ष्य", "स्वच्छ चरित्र अभियान"—लगा था। बैनरों के नीचे छोटे अक्षरों में आयोजक का नाम लिखा था, वो कंपनी जो पिछले दस साल से टैक्स चोरी के मामले में अदालतों में चक्कर काट रही थी।

मुख्य द्वार फूलों से ऐसा लदा था कि किसी शादी समारोह का भ्रम होता था। ऊपर स्वर्णिम अक्षरों में लिखा था—"सच्चाई की पवित्र गंगा में आपका स्वागत"—और नीचे लिखा था—"प्रवेश शुल्कः 500 रुपये (रसीद की आवश्यकता नहीं)।" द्वार पर खड़े स्वयंसेवक आगंतुकों को बड़े सम्मान से अंदर भेज रहे थे, साथ में धीरे से फुसफुसाते—"रसीद मत लीजिए, इससे आयोजन को नुकसान होगा।" यह सलाह इतनी आत्मीय थी कि लोग अपनी जेबें निकालकर खुशी-खुशी नकद दे रहे थे।

अंदर एक विशाल मंच तैयार था। लाल कालीन, पंडाल के ऊँचे स्तंभों पर सुनहरे कपड़े, और मध्यम रोशनी—सब कुछ ऐसा दिख रहा था जैसे आज कोई ऐतिहासिक घोषणा होने वाली हो। मंच के सामने कुर्सियों की कतारें लगी थीं, जिन पर पहले से आए प्रतिनिधि गर्व से बैठे थे, मानो वे दुनिया की नैतिकता को अपने कंधों पर ढो रहे हों। हर व्यक्ति के हाथ में एक फोल्डर था, जिस पर लिखा था—"मेरी ईमानदार यात्रा"—हालाँकि उन फोल्डरों में कुछ भी नहीं था, सिवाय एक खाली पन्ने के जो भविष्य में भरा जा सकता था, यदि कभी सुविधा हो।

ग्यारह बजते ही उद्घोषक ने इतनी नाटकीय आवाज़ में घोषणा की कि पूरा पंडाल गूँज उठा—"सत्य और नैतिकता के शिखर पुरुष, माननीय मंत्री महोदय पधार रहे हैं!" सभा खड़ी हो गई। मंत्री जी ने मंच पर आते ही मुस्कुराकर हाथ हिलाया, जैसे वह अपने ऊपर चल रही सभी जांचों को हवा में उड़ा रहे हों। उनके चेहरे पर वही शांत भाव था जो किसी साधु के चेहरे पर तपस्या के बाद आता है—यही वह शांति थी जो लोगों को विश्वास दिलाती थी कि वह चाहे कितने भी घोटालों से घिरे हों, अंदर से पवित्र हैं।

मंत्री जी ने माइक पकड़ा और बोले—"देश में ईमानदारी की कमी नहीं, बस उसे समझने का बौद्धिक स्तर कम है। कुछ लोग हमें बदनाम कहते हैं, लेकिन वे समझते नहीं कि बड़े काम करने के लिए बड़े साधन चाहिए। जनता हमारी नीयत पर भरोसा करे—हम वही करते हैं जो देश के व्यापक हित में हो।" भीड़ ने तालियाँ बजाईं। सामने बैठे एक व्यापारी ने ताली बजाते हुए अपने पड़ोसी से कहा—"कितनी सच्ची बात है! हम भी तो टैक्स इसलिए नहीं भरते ताकि देश की अर्थव्यवस्था संभली रहे। अगर हम सब भरने लगेंगे तो सरकारी तंत्र ओवरलोड हो जाएगा।"

मंत्री के भाषण के बाद समारोह का दूसरा चरण शुरू हुआ—"सच सम्मान समारोह।" हर प्रतिनिधि को एक चमकदार मेडल दिया गया जिस पर लिखा था—"ईमानदारी का रक्षक।" यह मेडल इतने हल्के थे कि हवा में उड़ जाएं, पर दिखते किसी सोने के सिक्के जैसे थे। जब एक पत्रकार ने आयोजक से पूछा—"क्या यह मेडल असली धातु से बने हैं?", आयोजक ने मुस्कुराकर कहा—"धातु नकली हो या असली, भावना असली है। और इस समारोह में भावना ही सबकुछ है।"

फिर मंच पर एक लंबा सत्र हुआ जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने "नैतिकता के आधुनिक रूप" पर विचार व्यक्त किए। एक वरिष्ठ सरकारी कर्मचारी ने गर्व से बताया—"हमारे विभाग में अब रिश्वत नहीं ली जाती। अब इसे 'प्रोसेसिंग फीस' कहा जाता है। शब्द बदलते हैं, पर ईमानदारी कायम रहती है।" दर्शक मंत्रमुग्ध होकर सुनते रहे, जैसे कोई नया सिद्धांत खोजा गया हो। फिर एक निजी अस्पताल के निदेशक ने कहा—"हम मरीजों से जो अतिरिक्त शुल्क लेते हैं, वह हमारी सेवा भावना का प्रमाण है। जब तक शुल्क नहीं लिया जाता, सेवा का मूल्य कैसे पता चले?" लोग सिर हिलाकर सहमत हुए।

इसी बीच पंडाल के कोने से घोषणा हुई—"जो प्रतिनिधि दोपहर के भोजन के कूपन के लिए पंजीकरण नहीं करा पाए हैं, वे जल्दी करें। बिना कूपन के भोजन का आनंद नहीं दिया जाएगा, क्योंकि यह कार्यक्रम पूर्णतः पारदर्शी है।" लोग लाइन में लग गए। पारदर्शिता का यह नया रूप देखकर कार्यक्रम की मान्यता जैसे और बढ़ गई।

तभी सभा के पीछे से एक वृद्ध किसान मंच की तरफ बढ़ा। उसके हाथ में एक पुरानी, मुड़ी-तुड़ी फ़ाइल थी। वह काँपती आवाज़ में बोला—"साहब, मेरी पेंशन की फ़ाइल चार महीने से अटकी है। घर चलाना मुश्किल हो रहा है" बाबू जी ने पीछे से उसे रोकते हुए कहा—"यह सत्य का महा समारोह है, कोई कार्यालय नहीं। यहाँ समस्याओं की नहीं, आदर्शों की चर्चा होती है। जाकर कोने में बैठो, व्यवधान मत डालो।" किसान चुप हो गया, लेकिन उसके पीछे खड़े एक किशोर ने धीरे से कहा—"अगर यहाँ सब ईमानदार हैं, तो मेरी दादी की पेंशन किसने रोकी है?" यह वाक्य हवा में ऐसे तैर गया कि पूरे पंडाल की महान आत्माएं कुछ पल के लिए मौन हो गईं। पंखे की घूमती आवाज़ भी जैसे इस सवाल का जवाब खोजने लगी।

भारत का अडिग फैसला: राष्ट्रीय हितों की राह पर रूस से ऊर्जा साझेदारी और व्यापार विस्तार की नई कहानी

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की भारत यात्रा अपने आप में सिर्फ एक कूटनीतिक घटना नहीं, बल्कि वैश्विक रिश्तों के बदलते स्वरूप का वह अध्याय है जिसने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत अब किसी के दबाव में चलने वाला देश नहीं, बल्कि अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देने वाली स्वतंत्र वैशशक्ति है। इस यात्रा ने दुनिया को यह संदेश दिया कि भारत अपनी विदेश नीति को न तो किसी पश्चिमी दबाव से संचालित होने देगा और न ही किसी के भू-राजनीतिक खेल का मोहरा बनेगा। यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद पुतिन की यह पहली भारत यात्रा थी और यही वजह थी कि वाशिंगटन से लेकर यूरोप तक सभी की निगाहें दिल्ली पर टिकी थीं। अमेरिका और यूरोपीय देशों की चिंताएँ इस तथ्य से और बढ़ गई थीं कि उन्होंने कई बार खुले तौर पर भारत पर रूसी तेल न खरीदने का दबाव बनाया, पर भारत ने एक ही वाक्य दोहराया—राष्ट्रीय हित सर्वोपरि।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में भारत ने साफ कहा कि वह यूक्रेन युद्ध के समाधान में सकारात्मक योगदान देने को तैयार है, लेकिन किसी भी दबाव, निर्देश, सलाह या धमकी के आधार पर अपनी नीति नहीं बदलेगा। भारत ने दुनिया को याद दिलाया कि उसका उद्देश्य हमेशा शांति रहा है, लेकिन किसी भी देश को यह अधिकार नहीं कि वह भारत को बताए कि उसे किससे क्या खरीदना चाहिए। दुनिया जानती है कि भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का 85% क्रूड ऑयल बाहर से खरीदता है और ऐसे में दाम में मामूली कमी भी अरबों डॉलर का फर्क पैदा करती है। यही कारण है कि रूस से तेल खरीद ने भारत को बीते दो वर्षों में लगभग 13 अरब डॉलर का प्रत्यक्ष फायदा दिया। यह वही लाभ है जिसकी वजह से भारत ने तेल पर पश्चिमी प्रतिबंधों को नजरअंदाज करते हुए साफ कहा कि वह अपनी जनता के हितों की कीमत पर किसी की राजनीति का हिस्सा नहीं बनेगा। मुलाकात के दौरान दोनों नेताओं ने 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 100 अरब डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य तय किया। पिछले वर्ष यह आँकड़ा 68.7 अरब डॉलर था, जिसमें से बड़ा हिस्सा कच्चे तेल से जुड़ा हुआ था। यह व्यापार अभी रूस के पक्ष में झुका हुआ दिखता है, लेकिन भारत के पास इसे संतुलित करने की रणनीतिक क्षमता है। ईएईयू (यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन) के साथ संभावित फ्री ट्रेड एग्रीमेंट इस दिशा में बड़ी भूमिका निभा सकता है। इस पर बातचीत तेज़ी से आगे बढ़ रही है और यह समझौता भारत को उस विशाल बाज़ार में मजबूती से प्रवेश दिला सकता है जिस पर अभी यूरोप और चीन की मजबूत पकड़ है।

भारत–रूस की मजबूत निकटता का प्रभाव सिर्फ आर्थिक या ऊर्जा क्षेत्र में नहीं, बल्कि रणनीतिक और रक्षा सहयोग में भी दिख रहा है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान S-400 डिफेंस सिस्टम की क्षमता ने भारत को और अधिक यूनिटें खरीदने की दिशा में प्रेरित किया है। इसके अलावा संयुक्त निर्माण, तकनीकी ट्रांसफर और परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग भी इस यात्रा में पुनर्पुष्ट हुआ है। दोनों देशों के बीच दशकों पुराना रक्षा विश्वास आज भी उतना ही मजबूत है, और यह विश्वास भविष्य में और गहरा होने की संभावना लिए आगे बढ़ रहा है।

अमेरिका के लिए यह स्थिति कम चुनौतीपूर्ण नहीं है। उसी समय जब भारत और रूस व्यापार और ऊर्जा संबंध बढ़ाने पर सहमत हो रहे थे, उसी सप्ताह अमेरिका की एक उच्चस्तरीय टीम भारत आने वाली है ताकि संभावित ट्रेड एग्रीमेंट पर बातचीत तेज की जा सके। यह महज संयोग नहीं बल्कि स्पष्ट संकेत है कि पुतिन की यात्रा ने वाशिंगटन पर दबाव बढ़ाया है कि वह भारत के साथ संबंधों को लेकर अधिक लचीला रवैया अपनाए। भारत अब विकल्पों में बंधा हुआ देश नहीं, बल्कि विकल्प तय करने वाली शक्ति है।

पुतिन की इस यात्रा का सार यह है कि भारत न तो पश्चिम का पिछलग्गू बनने वाला है, न रूस का मोहरा। वह उन रिश्तों को प्राथमिकता देता है जहाँ उसके नागरिकों का हित, उसका आर्थिक विकास, उसकी ऊर्जा सुरक्षा और उसका रणनीतिक भविष्य सुरक्षित रहे। इस यात्रा ने दिखा दिया कि भारत और रूस के रिश्ते किसी एक मुद्दे, किसी एक युद्ध या किसी एक दबाव से नहीं टूटते। वे इतिहास, भरोसे, परंपरा और पारस्परिक हितों पर आधारित हैं और आने वाले वर्षों में यह साझेदारी नए स्वरूपों में और मजबूत होकर उभरेगी। यह सिर्फ एक यात्रा नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भारत की आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी पहचान का बयान है—जो स्पष्ट करता है कि भारत अब केवल दोस्त नहीं चुनता, बल्कि रिश्तों की दिशा भी तय करता है।

अभियान

जब कोई छोटा चरण स्पर्श करता है, तब कौन-सी अदृश्य शक्ति जागती है - एक गहन और अनंत कथा

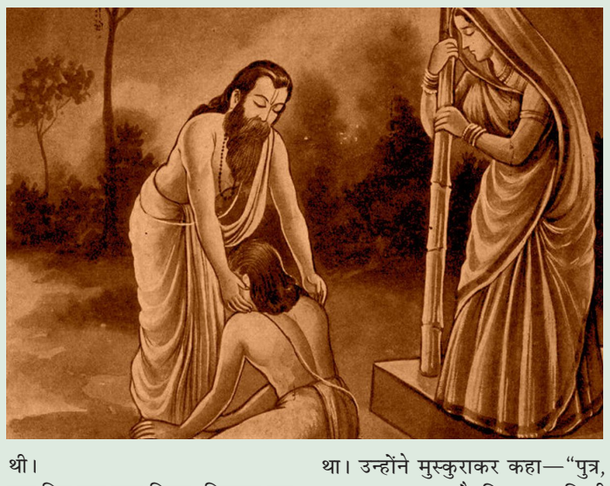

भारतीय जीवन में पैर छूने की परंपरा इतनी पुरानी है कि इसका आरंभ समय की धुंध में खो गया है। यह केवल एक प्रणाम, सम्मान या शिष्टाचार का संकेत नहीं, बल्कि मानव और दिव्यता के बीच होने वाला एक सूक्ष्म स्पर्श है—एक ऐसा स्पर्श जिसमें ऊर्जा बहती है, संस्कार खिलते हैं, और आत्मा थोड़ा और प्रकाशमय हो जाती है। परंतु अक्सर लोग यह प्रश्न पूछते हैं कि क्या किसी छोटे के द्वारा चरण छूने से बड़े का पुण्य घट जाता है? यह प्रश्न जितना सरल लगता है, उसके भीतर उतनी ही गहरी आध्यात्मिक जिज्ञासा छुपी होती है।

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए एक ऐसी कथा है जो युगों से ऋषियों के आश्रमों में, संतों की वाणी में और परंपरा की धड़कनों में जीवित है। कहा जाता है कि हिमालय की एक शांत घाटी में एक प्राचीन आश्रम था। वहाँ एक वृद्ध, शांत और तेजस्वी गुरु रहते थे। हर सुबह सूरज की पहली किरण के साथ शिष्य उनके पास आते, चरण स्पर्श करते, और आशीर्वाद लेकर लौट जाते। गुरु के चेहरे पर हमेशा वही दिव्य मुस्कान रहती थी—एक ऐसी मुस्कान जिसमें संसार की सारी थकान दूर हो जाती थी।

एक दिन एक युवा शिष्य, जिसका मन तर्क और उलझनों से भरा था, गुरु के पास आया और बोला—"गुरुदेव, मैं एक बात समझ नहीं पा रहा हूँ। इतने लोग प्रतिदिन आपके चरण छूते हैं, आप सबको आशीर्वाद देते हैं। क्या इस निरंतर आशीर्वाद देने से आपका पुण्य कम नहीं होता? आखिर देने से चीजें कम होती हैं—तो क्या पुण्य भी ऐसा ही है?"

गुरु ने उसकी ओर देखा, उनकी आंखों में संसार जैसा सौम्य प्रकाश था। उन्होंने मुस्कुराकर कहा—"पुत्र, तू यह समझता है कि पुण्य किसी मिट्टी के घड़े में भरा पानी है, जिसे निकाला तो वह खाली हो गया? पुण्य तो अग्नि की लौ की तरह है—जितना बांटो, वह उतना ही फैलती है। अब मैं तुझे एक कथा सुनाता हूँ, ध्यान से सुनना।"

गुरु ने अपनी दाढ़ी सहलाते हुए कहना शुरू किया—

"बहुत समय पहले एक नदी थी, विशाल और शांत। एक दिन जंगल के बीच रहने वाला एक साधारण चरवाहा उस नदी के पास आया और बोला—'मां, आज मेरा मन भारी है। लोग कहते हैं कि दूसरों को जल देने से नदी का जल कम हो जाता है। क्या यह सत्य है?' नदी हँसी और बोली—'पुत्र, यदि मैं अपनी धारा को रोक लूँ, केवल इसलिए कि कोई मेरा जल न ले पाए, तो क्या मैं नदी रहूँगी? मैं तो इसलिए नदी हूँ क्योंकि मैं बहती हूँ। जो जितना देता है, वह उतना ही अधिक हो जाता है।'"

यह सुनकर शिष्य की आँखें बड़ी हो गईं। गुरु आगे बोले—

"जब कोई छोटा श्रद्धा से किसी बड़े के चरण स्पर्श करता है, वह अपने भीतर की विनम्र ऊर्जा को बाहर निकालकर बड़े के हृदय में प्रवाहित कर देता है। यह ऊर्जा सामने वाले में करुणा, प्रेम और शुभाशय को जाग्रत करती है। जब ये भाव उठते हैं, तो आशीर्वाद अपने आप छोटे की ओर लौटता है। यह आदान-प्रदान एक दिव्य चक्र है — इसमें किसी का कुछ घटता नहीं, बल्कि दोनों का प्रकाश बढ़ता है।"

गुरु रुके और फिर बोले—

"लेकिन पुत्र, जिस दिन मनुष्य यह सोचने लगे कि 'किसी ने मेरे चरण छू लिए तो मेरा पुण्य घट जाएगा', उस दिन उसका पुण्य सच में घट जाता है — क्योंकि उस क्षण उसके भीतर अहंकार जन्म ले लेता है। अहंकार वह अग्नि है जो तपस्या की कमाई को पलभर में भस्म कर देती है। जबकि विनम्रता वह जल है जो सूखी हुई आत्मा को भी हरा-भरा कर देता है।"

शिष्य अब समझने लगा था, पर फिर भी उसने पूछा—"परंतु गुरुदेव, लोग कहते हैं कि चरण छूने वाले का पुण्य बढ़ जाता है। कैसे?"

गुरु ने उसकी ओर गहरी दृष्टि से देखा और बोले—

"जब एक शिष्य या कोई छोटा झुकता है, तो वह अपनी 'अहम्' रूपी कठोर चट्टान को तोड़ देता है। इस क्षण वह रिक्त हो जाता है—और जब मनुष्य रिक्त होता है, तभी ईश्वर का प्रकाश उसमें भरता है। यही कारण है कि शास्त्रों में लिखा है कि चरण स्पर्श करने से न केवल झुकने वाले का बल्कि चरण लेने वाले का पुण्य भी बढ़ता है। क्योंकि दोनों उस पल अहंकार से मुक्त हो जाते हैं। और जहां अहंकार नहीं होता, वहां ईश्वर होता है। और जहां ईश्वर होता है, वहां पुण्य अपने आप खिल उठता है।" कहानी यहाँ समाप्त नहीं होती। उसी रात शिष्य ने एक स्वप्न देखा—वह एक विशाल पर्वत पर खड़ा है। उसके आगे हजारों दीप जल रहे हैं। फिर अचानक एक दैदीप्यमान हाथ उसके हाथ से दीप लेता है और एक दीप को हजारों दीपों में जलाता चला जाता है। सब दीप चमक उठते हैं, और उसका अपना दीप भी पहले से अधिक उज्जवल हो जाता है।

सुबह उसने गुरु से यह स्वप्न बताया। गुरु मुस्कुराए और बोले—"यही सत्य है। पुण्य दीपक की लौ है—जितना बांटो, उतना ही बढ़ता है।"

उस दिन शिष्य ने समझ लिया कि पैर छूने की परंपरा केवल एक आचार नहीं, बल्कि आत्मा के भीतर ईश्वर को जगाने की प्रक्रिया है। इसमें न कोई नुकसान होता है, न कोई कमी आती है। यह वह क्षण है जहाँ श्रद्धा झुकती है, अहंकार पिघलता है, करुणा बहती है, और पुण्य बढ़ता है। भारतीय संस्कृति ने हमेशा दिया है—सम्मान, आशीर्वाद, संस्कार, विनम्रता, और उस देने में कभी कमी नहीं आई। क्योंकि यह भूमि जानती है कि देने से चीजें घटती नहीं, बल्कि आत्मा और अधिक विस्तृत हो जाती है। इसीलिए चरण स्पर्श को पुण्य घटने से नहीं, पुण्य जागरण की परंपरा कहा गया है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

अहमदाबाद में साबरमती नदी के तट पर भव्य रूप से मनाया गया 'प्रमुख वरणी अमृत महोत्सव'

(जीएनएस)। गांधीनगर : बोचासणवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बीएपीएस) के प्रमुख के रूप में प्रमुख स्वामी महाराज को नियुक्त किए जाने के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर रविवार को अहमदाबाद में साबरमती रिवरफ्रंट पर प्रमुख वरणी अमृत महोत्सव मनाया गया।

यह भव्य और दिव्य समारोह केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में आयोजित हुआ।

इस अवसर पर केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि प्रमुख स्वामी महाराज के गुणों से जीवन का सार निकाला जा सकता है और जीवन के लिए उपयोगी बातें अपनाई जा सकती हैं।

उन्होंने कहा कि साबरमती नदी के तट पर भी प्रमुख स्वामी के जीवन के 75 गुणों को नौकाओं के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है, जो लोगों को जीवन जीने का मार्ग दिखाने का काम करता है।

श्री शाह ने कहा कि प्रमुख स्वामी महाराज के जीवन और योगदान की दृष्टि से देखें, तो उन्होंने एक ओर तो अध्यात्म और वैष्णव दर्शन को व्यापक बनाया, और व्यापक बनाने से भी बड़ा कार्य उसे व्यावहारिक बनाने का किया। उन्होंने भक्ति और सेवा, दोनों को एक-दूसरे के साथ जोड़कर 'नर में नारायण' के हमारे वेद वाक्य को बिना कुछ भी कहे चरितार्थ करने का काम किया है।

श्री शाह ने कहा कि प्रमुख स्वामी महाराज करुणा के माध्यम से दूसरे जीव का उद्धार करने की हमारी वर्षों पुरानी ऋषि संस्कृति को फैलाकर न केवल स्वामीनारायण संप्रदाय, बल्कि पूरे सनातन धर्म के लिए बहुत बड़ा काम किया है। उन्होंने सनातन धर्म के अनेक संप्रदायों में संत का तत्व संचित करने का काम कोई उपदेश दिए बिना ही किया और संत समाज की संन्यास व्यवस्था को सुदृढ़ किया।

श्री शाह ने कहा कि धीरे-धीरे समाज में भागवत श्रद्धा कम होते जा रही थी, तब प्रमुख स्वामी महाराज और उनके हजारों संतों ने अपने आचरण से सनातन धर्म के लिए संदेश फैलाकर उस श्रद्धा को पुनर्स्थापित किया है।

उन्होंने आगे कहा कि सनातन धर्म ने इतने हजारों वर्षों की यात्रा में अनेक संकटों का सामना किया। आजादी के बाद संत समाज और संन्यास व्यवस्था के प्रति समाज की श्रद्धा कम होना, यह सबसे बड़ा संकट था। इस संकट

से बाहर आने के लिए प्रमुख स्वामी महाराज ने उपदेश का एक भी शब्द कहे बिना, अपने और अपने अनुयायी संतों के आचरण के जरिए एक सुंदर मार्ग ढूंढ़ निकाला, जो आज सनातन धर्म के संन्यासियों के लिए मार्गदर्शक बन गया है।

श्री शाह ने साबरमती नदी के तट को संतों के समर्पण का साक्षी बताया। उन्होंने दधीचि ऋषि का उदाहरण दिया और कहा कि इसी साबरमती के तट से महात्मा गांधी ने सत्याग्रह के शस्त्र से देश को स्वतंत्रता दिलाई।

उन्होंने कहा कि इसी अहमदाबाद में आमलीवाळी पोळ (इमलीवाली पोल) में प्रमुख स्वामी महाराज ने प्रमुख पद की सेवा स्वीकार की और 1950 से 2016 तक उनके द्वारा किए गए सभी कार्य आज समग्र देश के सभी संप्रदायों के लिए उदाहरणीय बने हैं।

श्री शाह ने विश्वास व्यक्त किया कि आज के कार्यक्रम से आमलीवाळी पोळ न केवल गुजरात या भारत, बल्कि समग्र विश्व के लिए मुलाकात का अविस्मरणीय स्थान बनेगी। उन्होंने जोड़ा कि स्वामीनारायण संप्रदाय की विशेषता यह है कि इस कार्यक्रम की रचना संप्रदाय के गुणगान के लिए नहीं,

बल्कि समाज की शिक्षा के लिए है और समाज के भीतर मौजूद अनेक प्रकार की बुराइयों को दूर करने के लिए की गई है। यह कार्यक्रम इस बात का बहुत बड़ा बोध बनने वाला है कि संत का जीवन कैसा होना चाहिए और संत जीवन से क्या सीखना चाहिए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि इस समारोह से जब लोग जाएंगे, तब सेवकों की सेवा-निष्ठा के गुण लेकर जाएंगे। यहां उपस्थित कई लोगों ने सत्संग के गुण अपने जीवन में उतारे हैं, जो स्वयंसेवकों के सेवाभाव में स्पष्ट रूप से देखने को मिलते हैं। उन्होंने कहा कि इन हरिभक्तों में यह गुण प्रमुख स्वामी महाराज तथा अन्य संतों के सान्निध्य में रहने से आया है। पैसे ले कर काम कर ना हो, तो भी ऐसी सेवा लोगों से नहीं होती है, परंतु यहां लाखों ऐसे भक्त हैं, जो पैसे भी देते हैं और सेवा भी देते हैं। सेवकों में 'जे करे, ए हरि करे' (जो करता है, वह हरि करता है) का भाव है।

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उपमुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में दिव्य समारोह आयोजित

बीएपीएस प्रमुख महंत स्वामी महाराज ने आशीर्वचन दिए, प्रमुख स्वामी महाराज के प्रतिज्ञा पालन और परोपकार सहित कई गुणों का परिचय कराया

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह :-

- प्रमुख स्वामी महाराज ने भक्ति और सेवा को एक-दूसरे के साथ जोड़कर 'नर में ही नारायण' के वेद वाक्य को चरितार्थ किया
- प्रमुख स्वामी महाराज ने अपने आचरण से सनातन धर्म का संदेश फैलाकर धीरे-धीरे कम होती जा रही भागवत श्रद्धा को पुनर्स्थापित किया

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

- संतों के सान्निध्य में रहने से 'जो करता है, वह हरि करता है' का भाव और धर्मनिष्ठा के गुण आते हैं

श्री पटेल ने समझाया कि सफलता मिले, तो लोग 'स्व' की वाहवाही करते हैं, जबकि विफलता में लोग हरि को याद करते हैं, लेकिन सच्चा मर्म यह है कि जो कुछ होता है, वह भगवान करते हैं। सत्संग का सार यह है कि जीवन का मर्म समझ में आए और संतों से ही वही समझना है।

इस अवसर पर विधायक तथा प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री जगदीश विश्वकर्मा ने कहा कि प्रमुख स्वामी महाराज का समग्र जीवन हमारे लिए गुणों के प्रेरणापुंज समान है, जिसका शब्दों में वर्णन कर पाना संभव नहीं है। अपनी हर सांस को लोक कल्याण के लिए समर्पित करने वाले प्रमुख स्वामी महाराज के व्यक्तित्व को समझने के लिए जीवन छोटा पड़ेगा। उन्होंने जोड़ा कि प्रमुख स्वामी महाराज के नाम स्मरण मात्र से ही अंतर में शांति स्थापित हो जाती है।

बोचासणवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बीएपीएस) के प्रमुख महंत स्वामी महाराज ने इस अवसर पर आशीर्वचन देते हुए कहा कि प्रमुख स्वामी महाराज ने प्रमुख होने के बावजूद जीवनभर दास भाव से सेवा ही की। उनके जीवन के गुण अनन्य हैं। महंत स्वामी ने अपनी युवावस्था की स्मृति ताजा करते हुए प्रमुख स्वामी महाराज के प्रतिज्ञापालन, परोपकार आदि गुणों का परिचय कराया।

इस समारोह में युवाओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां की गईं। इस अवसर पर बीएपीएस के वरिष्ठ संत तथा हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे चलाएगी बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा – मदार के बीच सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन

(जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा तथा यात्रा की बढ़ती मांग को पूरा करने एवं अतिरिक्त भीड़ को नियंत्रित करने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा – मदार स्टेशनों के बीच विशेष किराए पर एक सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन चलाएगी। पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस ट्रेन का विवरण इस प्रकार हैः

ट्रेन संख्या 09604/09603 बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा – मदार सुपरफास्ट स्पेशल (02 फेरे)

ट्रेन संख्या 09604 बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा सुपरफास्ट स्पेशल मंगलवार, 09 दिसम्बर 2025 को बांद्रा टर्मिनस से 19:25 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 15:10 बजे दुर्गापुरा पहुंचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09603 मदार – बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल सोमवार, 08 दिसम्बर 2025 को मदार से 18:45 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 16:30 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी।

यह ट्रेन दोनो दिशाओं में बोरीवली, वापी, वलसाड, नवसारी, सूरत, वडोदरा, रतलाम, भवानी मंडी, रामगंज मंडी, कोटा और सवाई माधोपुर स्टेशनों पर ठहरेंगी। मदार स्टेशन से प्रस्थान करनेवाली ट्रेन संख्या 09603 का किशनगढ़, जयपुर और दुर्गापुरा स्टेशनों पर अतिरिक्त ठहराव होगा।

इस ट्रेन में AC-2 टियर, AC-3 टियर, AC-3 टियर (इकोनॉमी), स्लीपर क्लास तथा जनरल सेकंड क्लास कोच होंगे।

ट्रेन संख्या 09604 की बुकिंग 08.12.2025 से सभी पीआरएस काउंटरों एवं आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

माननीय सांसद श्रीं मितेषभाई पटेल और माननीय मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी ने हरी झंडी दिखाकर की वासद – कठाणा खंड पर डेमू सेवा की शुरुआत

(जीएनएस)। आणंद के माननीय सांसद श्रीं मितेषभाई पटेल, गुजरात सरकार के माननीय खाद्य विभाग,नागरिक आपूर्ति, उपभोक्ता सुरक्षा मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी तथा उपस्थित अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा आज, 7 दिसंबर, 2025 को कठाणा में आयोजित समारोह में कठाणा से डेमू को हरी झंडी दिखाकर वासद – कठाणा खंड पर इस सेवा को पुनर्बहाल किया गया। इस अवसर वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके एवं मंडल के वरिष्ठ अन्य अधिकारी, प्रेस एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधि एवं क्षेत्र की जनता उपस्थित थी। उद्घाटक सेवा के रूप में यह डेमू ट्रेन कठाणा से वासद के बीच परिचालित की गई । 8 दिसंबर, 2025 से यह डेमू अपनी नियमित सेवा के रूप में कठाणा और वडोदरा के बीच परिचालित होगी। माननीय जनप्रतिनिधियों ने डेमू सेवा में सफ़र भी किया।

आणंद के माननीय सांसद श्रीं मितेषभाई पटेल ने वर्षों बाद जनता की मांग पर इस सेवा को पुनः शुरु किये जाने पर ख़ुशी ज़ाहिर की। श्री पटेल ने कठाणा के लोगो को बधाई देते हुए कहा कि यह ट्रेन शुरु होने से स्थानीय निवासियों को काफी सहूलियत होगी। उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का आभार प्रकट किया कि वो अपने व्यस्त जीवन में भी राष्ट्र की जनता की चिंता करते है और गुजरात में भयंकर बाढ़ के बाद उन्होंने गुजरात सरकार और रेल मंत्री जी के साथ जनता की परेशानिया दूर करने की योजना बनाई। उन्होंने माननीय रेलमंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी का भी धन्यवाद किया, जिनके निर्देश पर यह सपना साकार हुआ। उन्होंने वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के पॉजिटिव सपोर्ट का भी धन्यवाद दिया। उन्होंने मंडल रेल प्रबंधक से ट्रेन के स्टॉपेज बढ़ाने और इस मार्ग पर भविष्य में इलेक्ट्रिक ट्रेन चलाने की मांग की।

गुजरात सरकार के माननीय खाद्य विभाग,नागरिक आपूर्ति, उपभोक्ता सुरक्षा मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी ने जनमानस

को सम्बोधित करते हुए बताया कि इस ट्रेन को कोरोना काल के बाद दुबारा चलाने की मांग सोशल मीडिया पर भी लोगों द्वारा जोर शोर से हो रही थी।आज जनता का सपना साकार हो रहा है और कोरोना काल के बाद इस रेलखंड पर पुनः यह डेमू ट्रेन शुरु हो रही है। उन्होंने माननीय रेलमंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी का विशेष तौर पर धन्यवाद किया, जिनके विशेष प्रयासों से डेमू ट्रेन की शुरुआत हुई, जिससे कठाणा और आस पास के क्षेत्रों से रोजगार एवं शिक्षा के लिया वडोदरा जाने वाले युवाओं, आस पास के गांव की जनता को इस ट्रेन के दुबारा शुरु होने से लाभ मिलेगा। उन्होंने लोगो से इस ट्रेन से ज्यादा से ज्यादा सफ़र कर सहयोग करने का भी अनुरोध किया, जिससे बढ़ती मांग को देखते हुए इसमें कोचों की संख्या बढ़ाई जा सके और ज्यादा से ज़्यादा लोगों को इस सुविधा का लाभ मिल सके।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में वडोदरा मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने मुख्य अतिथि, माननीय जनप्रतिनिधिओं एवं अन्य अतिथिगणों का स्वागत किया तथा माननीय सांसद श्री मितेषभाई पटेल द्वारा रेल सुविधाएँ बढ़ाने के लिए किए जा रहे निरंतर प्रयासों की सराहना की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार माननीय रेलमंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी के निर्देशन में महज़ 4 महीने में इस कठिन कार्य को मंडल के अधिकारिओं एवं कर्मचारिओं ने सफलतापूर्वक किया। श्री भडके ने बताया कि कथना से वड़ोदरा के बीच अभी 4 घंटे का सफ़र है, जिसे भविष्य में और कम किया जायेगा। जिला परिषद् के सहयोग से समपार फाटकों को डायवर्सन देकर या उन फाटकों पर रोड ओवर ब्रिज बनाकर इसे बंद किया जायेगा, जिससे ट्रेन की गति को बढ़ाया जा सकेगा। इससे कठाणा और वडोदरा के बीच का सफ़र महज़ 2 घंटों में पूरा किया जा सकेगा और यात्रिओं के समय की बचत होगी। आणंद के सांसद श्री मितेषभाई पटेल, गुजरात सरकार के माननीय खाद्य विभाग,नागरिक आपूर्ति, उपभोक्ता सुरक्षा मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी और जनप्रतिनिधियों ने इस अवसर पर कठाणा - वासद रेल खंड को महज़ 4 महीने में अपनी मेहनत से ट्रेन परिचालन योग्य बनाने के लिए मंडल रेल प्रबंधक तथा मंडल के रेल अधिकारियों का सम्मान किया।

अपनी नियमित सेवा के रूप में 8 दिसंबर, 2025 से सप्ताह में 6 दिन (शनिवार को छोड़कर) यह डेमू कठाणा और वडोदरा के बीच परिचालित होगी। ट्रेन संख्या 79440 कठाणा - वडोदरा डेमू कठाना से प्रातः 5.15 बजे प्रस्थान कर प्रातः 9.20 बजे वडोदरा पहुंचेगी। वापसी में ट्रेन संख्या 79439 वडोदरा – कठाणा डेमू वडोदरा से 16.55 बजे प्रस्थान कर 21.00 बजे कठाणा पहुंचेगी। यह डेमू दोनों दिशाओं में बोचासन, बोरसद, वासद, नन्देसरी, रनोली और बाजवा स्टेशनों पर ठहरेगी।

भावनगर टर्मिनस स्टेशन यार्ड में पिट लाइन के कार्य हेतु ब्लॉक लिए जाने के कारण 12 दिसंबर से भावनगर मंडल की कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के भावनगर टर्मिनस स्टेशन यार्ड में पिट लाइन संख्या–2 के मरम्मत कार्य हेतु ब्लॉक लेकर जो गाड़ियां 8 दिसंबर, 2025 (सोमवार) से निरस्त की जानी थी उन्हें अब 12 दिसंबर, 2025 (शुक्रवार) से आगामी 45 दिनों तक के लिए निरस्त किए जाने का निर्णय लिया गया है। इस अवधि के दौरान ट्रेनों का निरस्तीकरण, शॉर्ट टर्मिनेशन/ओरिजिनेशन तथा पुनर्निर्धारण किया गया है। यात्रियों से अनुरोध है कि यात्रा से पूर्व संबंधित जानकारी अवश्य प्राप्त कर लें। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार प्रभावित ट्रेनों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार हैः

निरस्त (Cancel) की जाने वाली ट्रेनें

1. ट्रेन नंबर 59228/59233 भावनगर–सुरेंद्रनगर–भावनगर पैसेन्जर दिनांक 12.12.2025 से 25.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
2. ट्रेन नंबर 59267/59268 भावनगर–पालिताना–भावनगर पैसेन्जर दिनांक 12.12.2025 से 25.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
3. ट्रेन नंबर 59269/59270 भावनगर–पालिताना–भावनगर पैसेन्जर दिनांक 12.12.2025 से 25.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
4. ट्रेन नंबर 59230 भावनगर–बोटाद पैसेन्जर दिनांक 12.12.2025 से 25.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
5. ट्रेन नंबर 59229 बोटाद-भावनगर पैसेन्जर दिनांक 13.12.2025 से 26.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
6. ट्रेन नंबर 59204/59271 भावनगर–बोटाद–भावनगर पैसेन्जर दिनांक 12.12.2025 से 25.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
7. ट्रेन नंबर 59235 धोला-महुवा पैसेन्जर दिनांक 12.12.2025 से 25.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
8. ट्रेन नंबर 59236 महुवा-धोला पैसेन्जर दिनांक 13.12.2025 से 26.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।
9. ट्रेन नंबर 09529/09530 धोला–भावनगर–धोला टीओडी स्पेशल दिनांक 12.12.2025 से 25.01.2026 तक कुल 45 दिन निरस्त रहेगी।

पुनर्निर्धारित ट्रेनें (Rescheduled Trains)

1. ट्रेन नंबर 12972 (भावनगर–बान्द्रा टर्मिनस सुपरफास्ट) दिनांक 16.12.2025, 23.12.2025, 30.12.2025, 06.01.2026, 13.01.2026 और 20.01.2026 को अर्थात् प्रत्येक मंगलवार को 2 घंटा 30 मिनट विलंब से चलेगी।
2. ट्रेन नंबर 19271 (भावनगर–हरिद्वार एक्सप्रेस) दिनांक 18.12.2025, 25.12.2025, 01.01.2026, 08.01.2026, 15.01.2026 और 22.01.2026 को अर्थात् प्रत्येक गुरुवार को 3 घंटा विलंब से चलेगी।
3. ट्रेन नंबर 20966 (भावनगर–गांधीग्राम सुपरफास्ट इंटरसिटी) दिनांक 14.12.2025, 18.12.2025, 21.12.2025, 25.12.2025, 28.12.2025, 01.01.2026, 04.01.2026, 08.01.2026, 11.01.2026, 15.01.2026, 18.01.2026, 22.01.2026 और 25.01.2026 को अर्थात् प्रत्येक रविवार एवं गुरुवार को 30 मिनट विलंब से चलेगी।
4. ट्रेन नंबर 59558 (भावनगर–वेरावल पैसेन्जर) दिनांक 13.12.2025, 20.12.2025, 27.12.2025, 03.01.2026, 10.01.2026, 17.01.2026 और 24.01.2026 को अर्थात् प्रत्येक शनिवार को अपने निर्धारित समय से 3 घंटा विलंब से चलेगी।

शॉर्ट टर्मिनेशन/ओरिजिनेशन (Short Termination/Origination)

1. ट्रेन नंबर 19209 (भावनगर–ओखा एक्सप्रेस) दिनांक 13.12.2025 से 25.01.2026 तक प्रत्येक मंगलवार, बुधवार, शनिवार एवं रविवार को राजकोट स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी (सप्ताह में 4 दिन)। अर्थात् यह ट्रेन सप्ताह में तीन दिन सोमवार, गुरूवार और शुक्रवार को भावनगर टर्मिनस से चलकर ओखा तक जाएगी, बाकी दिन (मंगलवार, बुधवार, शनिवार एवं रविवार को) भावनगर से चलकर राजकोट तक जाएगी।
2. ट्रेन नंबर 19210 (ओखा–भावनगर एक्सप्रेस) दिनांक 14.12.2025 से 26.01.2026 तक प्रत्येक रविवार, सोमवार, बुधवार और गुरूवार को राजकोट स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी (सप्ताह में 4 दिन)। यह ट्रेन रविवार, सोमवार, बुधवार और गुरुवार को राजकोट स्टेशन से प्रस्थान करेगी अर्थात् यह ट्रेन राजकोट से चलकर भावनगर तक जाएगी। बाकी तीन दिन मंगलवार, शुक्रवार एवं शनिवार को यह ट्रेन अपने निर्धारित समयानुसार ओखा से चलकर भावनगर तक जाएगी।

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त किसी भी ट्रेन के समय में परिवर्तन नहीं किया गया है। उपरोक्त दोनों ट्रेनें अपने निर्धारित समयानुसार हीं चलेंगी।

उक्त सभी परिवर्तन 45 दिनों तक या पिट लाइन संख्या–2 के पूर्ण रूप से परिचालन में आने तक लागू रहेंगे। आम जनता को विभिन्न माध्यमों से इसकी व्यापक जानकारी दी जा रही है।

यात्रियों से अनुरोध है कि असुविधा से बचने के लिए यात्रा से पूर्व संबंधित स्टेशन अथवा रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in से अद्यतन जानकारी प्राप्त करें।

पश्चिम रेलवे चलाएगी मुंबई सेंट्रल और नई दिल्ली के बीच स्पेशल ट्रेन

(जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए तथा यात्रा मांग को पूरा करने के उद्देश्य से, पश्चिम रेलवे द्वारा मुंबई सेंट्रल और नई दिल्ली के बीच विशेष किराये पर एक स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस स्पेशल ट्रेन का विवरण निम्नानुसार हैः

ट्रेन संख्या 04003/04004 मुंबई सेंट्रल – नई दिल्ली सुपरफास्ट स्पेशल (02 फेरे)

ट्रेन संख्या 04003 मुंबई सेंट्रल – नई दिल्ली स्पेशल सोमवार, 08 दिसम्बर, 2025 को मुंबई सेंट्रल से 23:30 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 20:50 बजे नई दिल्ली पहुँचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 04004 नई दिल्ली – मुंबई सेंट्रल स्पेशल रविवार, 07 दिसम्बर, 2025 को नई दिल्ली से 22:40 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 21:00 बजे मुंबई सेंट्रल पहुँचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, सूरत, वडोदरा, रतलाम, नागदा, कोटा तथा मथुरा स्टेशनों पर ठहरेगी।

इस ट्रेन में एसी 3-टियर (इकोनॉमी) कोचेस होंगे।

ट्रेन संख्या 04003 की बुकिंग सभी पीआरएस काउंटरों एवं आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू है। ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर योगदान अर्पित किया

देश की रक्षा के लिए प्राण न्यौछावर करने वाले वीर जवानों के परिवारों के कल्याण के लिए अंशदान देकर कृतज्ञता व्यक्त की

गांधीनगर, 07 दिसंबर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने रविवार को गांधीनगर में सशस्त्र सेना झंडा दिवस के अवसर पर योगदान अर्पित कर देश की सीमाओं और मातृभूमि की रक्षा करने वाले वीर जवानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की है। उल्लेखनीय है कि देश की रक्षा के लिए समर्पित होकर अपने प्राणों का बलिदान देकर वीरगति को प्राप्त हुए सेना और सशस्त्र बलों के कर्तव्यनिष्ठ जवानों के परिवारों के कल्याण के लिए सात दिसंबर को सशस्त्र सेना

झंडा दिवस के अवसर पर सभी लोग स्वैच्छिक योगदान-अंशदान अर्पित कर उनकी सेवाओं का ऋण स्वीकार करते हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने भी इस उद्देश्य से सशस्त्र सेना झंडा दिवस के अवसर पर अपना योगदान अर्पित किया।

इस अवसर पर सैनिक कल्याण और पुनर्वास बोर्ड के लेफ्टिनेंट कर्नल (सेवानिवृत्त) श्री कृष्णदीप सिंह सहित कई अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

रेलवे की ईमानदारी बनी यात्रियों का भरोसा: वेरावल स्टेशन पर लौटाया गया महिला यात्री का कीमती पर्स

(जीएनएस)। वेरावल रेलवे स्टेशन पर ईमानदारी, तत्परता एवं कर्तव्यनिष्ठा का एक सराहनीय उदाहरण सामने आया है । दिनांक 07.12.2025 (रविवार) को गाड़ी संख्या 22957 गांधीनगर कैपिटल–वेरावल "सोमनाथ एक्सप्रेस" में यात्रा कर रही एक महिला यात्री श्रीमती दिशा रूपारेलिया (कोच B3/46) का पर्स ट्रेन में छूट गया था, जिसे एक अन्य यात्री ने उस पर्स को लाकर वेरावल स्टेशन पर स्टेशन अधीक्षक के ओफिस में जमा करा दिया।

भावनगर रेलवे मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि यह पर्स उप स्टेशन अधीक्षक वेरावल श्री राजीव मिश्रा को जमा कराया गया था, जिसमें दो मोबाइल फोन, लगभग 5,000 नगद राशि एवं अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज व सामान मौजूद था। श्री मिश्रा द्वारा तत्परता दिखाते हुए तुरंत संबंधित यात्री से संपर्क कर पहचान सुनिश्चित की गई

तथा पर्स को सकुशल लौटा दिया गया। पर्स मिलने पर महिला यात्री ने उप स्टेशन अधीक्षक श्री राजीव मिश्रा की सजगता, ईमानदारी एवं त्वरित कार्रवाई की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए रेलवे प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त किया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने कहा कि भावनगर रेल मंडल ऐसे कर्तव्यनिष्ठ रेल कर्मियों के कार्यों की सराहना करता है, जो यात्रियों में रेलवे के प्रति विश्वास को और मजबूत करते हैं।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने अहमदाबाद को कई विकास परियोजनाओं की सौगात दी

(जीएनएस)। गांधीनग : गुजरात के दौरे पर आए केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने रविवार को अहमदाबाद को अनेक विकास परियोजनाओं की सौगात दी। अहमदाबाद महानगर पालिका (एएमसी) की 1507 करोड़ रुपए की विभिन्न जनोन्मुखी विकास परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल भी मौजूद रहे।

इस अवसर पर केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के करकमलों से देवनगर में आकार लेने वाले मिनी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के शिलान्यास सहित विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास किया गया। इस मौके पर मुख्यमंत्री गृह योजना के अंतर्गत बने 465 आवासों और प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बने 1573 आवासों का ड्रॉ भी निकाला गया। केंद्रीय गृह मंत्री ने आवासों के लाभार्थियों को प्रतीकात्मक रूप से घर की चाबी सौंपी।

उपस्थित महानुभावों के करकमलों से अहमदाबाद महानगर पालिका में नियुक्ति पाने वाले 102 सहायक फायरमैन को नियुक्ति पत्र सौंपे गए।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने विभिन्न विकास परियोजनाएं जनता को समर्पित करते हुए कहा कि तत्कालीन मुख्यमंत्री और मौजूदा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा गुजरात में शुरू की गई खेल महाकुंभ की यात्रा आज देश में खेलो इंडिया के जरिए आगे बढ़ी है। जिसके माध्यम से अनेक खिलाड़ी अपने शरीर और मन को मजबूत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जीतने का जुनून और हार में निराश नहीं होने के संस्कार भी खेलों से मिल रहे हैं।

श्री शाह ने आगे कहा कि अहमदाबाद में अनेक खेल परिसरों सहित अंतरराष्ट्रीय स्तर की व्यवस्थाएं की गई हैं, जिनके चलते खिलाड़ी पांच किलोमीटर के दायरे में इन सुविधाओं का लाभ उठाकर अपनी प्रतिभा को उजागर कर रहे हैं। उन्होंने जगह के सदुपयोग के लिए अहमदाबाद शहर को बधाई देते हुए कहा कि शहर में ओवरब्रिज के नीचे छोटे खेल परिसर, पुस्तकालय, ओपन जिम और योग परिसर बनाकर अहमदाबाद अनेक शहरों को प्रेरणा दे रहा है।

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम के बगल में सरदार पटेल स्पोर्ट्स एन्क्लेव बनने के साथ-साथ खेल क्षेत्र में अनेक सुविधाओं के विकास के कारण अहमदाबाद को कॉमनवेल्थ 2030 की मेजबानी मिली है। साथ ही, अहमदाबाद ने आगामी 2029 में दुनिया भर के पुलिस और फायर ब्रिगेड जवानों की खेल स्पर्धाओं और लगभग 13 अंतरराष्ट्रीय स्पर्धाओं के साथ 2036 ओलंपिक के लिए तैयारी की है। इसके साथ ही, अहमदाबाद वैश्विक खेल मानचित्र पर अग्रिम स्थान बना रहा है।

1500 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों के लिए राज्य के मुख्यमंत्री सहित सरकार के प्रति आभार व्यक्त करते हुए श्री शाह ने कहा कि ये काम विकास के बजट में जोड़े जाएंगे, विकास का कोई आयाम छूट न जाए, इसका ध्यान रखते हुए श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू की गई विकास यात्रा को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल आगे बढ़ा रहे हैं।

श्री अमित शाह ने कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में हर क्षेत्र में विकास हो रहा है, सरकार देश को महान बनाने के संकल्प के साथ काम कर रही है। ऐसे में, बिना नेता और नीति वालों को देश की जनता किसी भी कोने में स्थान नहीं दे रही है, जो सरकार के प्रति जनता के विश्वास को बताता है।

उन्होंने अयोध्या राम मंदिर निर्माण के संबंध में कहा कि देश के प्रधानमंत्री के नेतृत्व में वर्ष 2019 में भूमिपूजन, 2024 में प्राण प्रतिष्ठा और 2025 में ध्वज लहराने का गौरवपूर्ण कार्य हुआ है। साथ ही, सीता माता के जन्म स्थान पर भी भूमिपूजन कर इस यात्रा को आगे बढ़ाने का काम हो रहा है।

श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश में सुरक्षा, अर्थव्यवस्था, अवसंरचना विकास, सिंचाई की सुविधा में वृद्धि, अनाज उत्पादन में बढ़ोतरी और एमएसपी पर खरीदी में वृद्धि जैसे अनेक आयामों के जरिए देश की प्रतिष्ठा दुनिया भर में बढ़ रही है।

श्री अमित शाह ने गुजरात के विभिन्न विकास के मील के पत्थरों की बात करते हुए कहा कि दुनिया का सबसे बड़ा हाइब्रिड रिन्यूएबल एनर्जी पार्क गुजरात में साकार होने जा रहा है। एशिया की सबसे बड़ी ग्रीनफील्ड सिटी धोलेरा गुजरात में निर्माणाधीन है। भारत का सबसे लंबा एक्सप्रेस हाईवे सूरत-चेन्नई हाईवे गुजरात से होकर गुजर रहा है। देश की सबसे पहली फाइनेंस टेक-सिटी 'गिफ्ट सिटी' गुजरात में है। पहली बुलेट ट्रेन अहमदाबाद से मुंबई के बीच शुरू होने जा रही है तथा पहली नमो रैपिड रेल भुज से अहमदाबाद के बीच शुरू हो चुकी है।

श्री शाह ने कहा कि देश आगे बढ़ रहा है, तब गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र को हरित लोकसभा क्षेत्र बनाने के लिए हम सभी को कमर कसनी होगी, इसके लिए उन्होंने सभी लोगों से 5 से 50 पौधे लगाने और उनका संरक्षण करने का भी संकल्प लेने का अनुरोध किया।

केंद्रीय गृह मंत्री ने सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर सेना के अप्रतिम साहस, शौर्य और उनके बलिदान की सराहना करते हुए उन्हें हृदयपूर्वक श्रद्धांजलि दी।

मुख्यमंत्री ने सशस्त्र सेना झंडा दिवस के अवसर पर देश सेवा और सीमाओं की सुरक्षा करने वाले सभी जवानों के त्याग, तपस्या और बलिदान का स्मरण करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने सैनिक कल्याण के अनेक कार्यों से जवानों का गौरव-सम्मान किया है। देश की सीमाओं के साथ ही आंतरिक सुरक्षा और सलामती का भी ध्यान रखा गया है। उनके नेतृत्व में देश में विकास की राजनीति का एक नया युग शुरू हुआ है और उसमें में गुजरात विकास के रोल मॉडल के रूप में अग्रणी रहा है। उन्होंने कहा कि गुजरात विकास की इस अविरत यात्रा में लगातार नए आयाम स्थापित कर रहा है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह द्वारा गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में निरंतर विकास कार्यों की भेंट दिए जाने का उल्लेख करते हुए कहा कि श्री शाह ने अहमदाबाद की विकास यात्रा को नया बल दिया है और उसी दिशा में आज फिर एक बार वे 1507 करोड़ रुपए के जनोन्मुखी कार्यों की भेंट दे रहे हैं। श्री अमित शाह ने अपने संसदीय क्षेत्र को देश का सर्वाधिक विकसित संसदीय क्षेत्र बनाने का लक्ष्य रखा है, जिसे साकार करने के लिए गांधीनगर संसदीय क्षेत्र में पिछले पांच वर्षों में 22551 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्य इस क्षेत्र में हुए हैं। मुख्यमंत्री ने जोड़ा कि आवास, ड्रेनेज, स्टॉर्म वॉटर लाइन, सड़क, बिजली सहित इंफ्रास्ट्रक्चर के कार्यों के कारण शहर की सुविधा में वृद्धि हुई है।

शहरी विकास की चर्चा करते हुए श्री पटेल ने कहा कि इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ नागरिकों के इज ऑफ लिविंग में वृद्धि हो; इसके लिए लेक डेवलपमेंट, बाग-बगीचों का विकास, लाइब्रेरी, खेल-कूद परिसर भी तैयार किए गए हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का सपना है कि देश के प्रत्येक नागरिक के सर पर पक्की छत हो, प्रत्येक का अपना घर हो। इसके लिए उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना शुरू कराई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) अंतर्गत गुजरात में 13 लाख से अधिक आवास बने हैं। ये आवास केवल ईंट-पत्थर के मकान नहीं, बल्कि पर्याप्त सुविधाओं से युक्त घर हैं।

कार्यक्रम अंतर्गत लोकार्पण तथा शिलान्यास होने वाले आवासों के बारे में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि श्री अमितभाई ने हमेशा लॉन्ग टर्म तथा सस्टेनेबल डेवलपमेंट पर बल दिया है। उनके सक्रिय प्रयासों के परिणामस्वरूप गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र हरित निर्वाचन क्षेत्र बना है। शहरी क्षेत्र का ही ग्रीन कवर लगभग 8 प्रतिशत बढ़ा है। मियावाकी पद्धति से अर्बन फॉरेस्ट का निर्माण में किया गया है। लगभग 28 लाख पेड़-पौधे लगाकर ग्रीन कवर में वृद्धि की गई है। वृक्षारोपण, तालाबों का पुनर्निर्माण, ऑक्सीजन पार्क सहित एक पूरा पर्यावरण इकोसिस्टम तैयार किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में जब देश का अमृतकाल चल रहा है, तब प्रधानमंत्री तथा केंद्रीय गृह मंत्री के सफल प्रयासों के परिणामस्वरूप अमृतकाल में अहमदाबाद को कॉमनवेल्थ गेम्स 2030 की मेजबानी प्राप्त हुई है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि कॉमनवेल्थ गेम्स के कारण अहमदाबाद शहर में विकास की गति दुगुनी होगी। आने वाले दिनों में अनेक विश्व स्तरीय परियोजनाएं साकार होंगी और अहमदाबाद देश के स्पोर्ट्स कैपिटल के रूप में स्थापित होगा। शहर की महापौर श्रीमती प्रतिभाबेन जैन ने स्वागत संबोधन में विकास परियोजनाओं के लोकार्पण-शिलान्यास कार्यक्रम सभी का स्वागत किया। उन्होंने अहमदाबाद को क्लीनेस्ट सिटी के रूप में सम्मान प्राप्त करने और कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी प्राप्त होने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह का आभार व्यक्त किया। श्रीमती जैन ने लोकार्पण-शिलान्यास किए गए विभिन्न विकास प्रोजेक्ट के विषय में चर्चा की और ऐसे जनोन्मुखी विकास कार्यों की भेंट देने के लिए केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह का आभार व्यक्त किया।

यहाँ उल्लेखनीय है कि केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने अहमदाबाद के थलतेज में 881 ईडब्लूएस आवासों का तुलसी रेजीडेंसी नामकरण कर लोकार्पण किया। इसके अलावा, साउथ बोपल में इलेक्ट्रोथर्म गार्डन का लोकार्पण, सरखेज गाँव में श्री क्षेत्र सरोवर का लोकार्पण, वस्त्रापुर में पुनर्विकसित किए गए भक्तकवि नरसिंह मेहता सरोवर – वस्त्रापुर तालाब का लोकार्पण किया।

साथ ही, श्री शाह ने मेमनगर में नारायणराव भंडारी ओपन पार्टी प्लॉट का लोकार्पण, नवा वाडज-नटना छापरा में रिहेबिलिटेट किए गए 250 आवासों का लोकार्पण तथा गोता में मिनी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का शिलान्यास किया। इसके अलावा, उन्होंने राणिप ओवरब्रिज के पास स्थित खेल-कूद गतिविधि परिसर एवं न्यू राणिप में स्थित जिम्नेशियम तथा वांचनालय (पठनालय) की मुलाकात भी ली।

विभिन्न विकास परियोजनाओं के लोकार्पण-शिलान्यास अवसर पर वित्त मंत्री श्री कनुभाई देसाई, ऊर्जा एवं पेट्रोरसायन मंत्री श्री ऋषिकेशभाई पटेल, राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला, राज्यसभा के सांसद श्री नरहरि अमीन, अहमदाबाद पूर्व व पश्चिम के सांसद श्री हसमुखभाई पटेल व श्री दिनेशभाई मकवाणा, अग्रणी श्री प्रेरकभाई शाह, अहमदाबाद शहर के विधायक, अहमदाबाद मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणि, उप महापौर, स्थायी समिति के अध्यक्ष, पार्षद, मनपा में शासक पक्ष के नेता, सचेतक, विभिन्न समितियों के अध्यक्ष, मनपा अधिकारी, पदाधिकारी तथा बड़ी संख्या में नगरजन उपस्थित रहे।

▶▶ अहमदाबाद महानगर पालिका के 1507 करोड़ रुपए के विभिन्न जनोन्मुखी विकास कार्यों के लोकार्पण व शिलान्यास सहित आवासों का ड्रॉ संपन्न

▶▶ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रोत्साहक उपस्थिति में 525 करोड़ रुपए के 28 विकास कार्यों का लोकार्पण और 982 करोड़ रुपए के 30 विकास कार्यों का शिलान्यास

▶▶ देवनगर में मिनी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का शिलान्यास किया गया और एएमसी में नवनियुक्त 102 सहायक फायरमैन को नियुक्ति पत्र सौंपे गए

केंद्रीय गृह मंत्री एवं सहकारिता श्री अमित शाह :-

▶▶ कॉमनवेल्थ 2030 की मेजबानी के साथ, अहमदाबाद 2036 ओलंपिक के स्वागत के लिए तैयार हो रहा है

▶▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वर्ष 2019 में भूमिपूजन, 2024 में प्राण प्रतिष्ठा और 2025 में ध्वज लहराने के साथ अयोध्या मंदिर का गौरवपूर्ण कार्य संपन्न हुआ

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

▶▶ श्री अमित शाह का गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र को देश का सबसे विकसित संसदीय क्षेत्र बनाने का लक्ष्य

▶▶ आगामी दिनों में अहमदाबाद देश की खेल राजधानी के रूप में स्थापित होगा

एनएच–43 पर दर्दनाक टक्कर, खड़े ट्रेलर से भिड़ी कार; पांच दोस्तों की मौत से चराईडांड़ में मातम

(जीएनएस)। छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में शनिवार देर रात एक भीषण सड़क हादसे ने पूरे क्षेत्र को दहला दिया। एनएच-43 पर पतराटोली के पास एक तेज रफ्तार कार सड़क किनारे खड़े ट्रेलर से इतनी जोरदार भिड़ी कि कार का अगला हिस्सा पूरी तरह चकनाचूर हो गया। टक्कर की ताकत इतनी थी कि वाहन में सवार पांचों लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। रात की खामोशी के बीच हुई इस भयावह दुर्घटना ने आसपास के ग्रामीणों और राहगीरों को भी दहला दिया, जो शोर सुनते ही मौके पर पहुंचे, लेकिन तब तक अंदर बैठे युवकों को बचाने के लिए कुछ भी संभव नहीं था। यह घटना दुलदुला थाना क्षेत्र की है।

प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, मृतक युवक कुनकुरी से जशपुर की ओर लौट रहे थे। स्थानीय लोग बताते हैं कि सड़क उस हिस्से में अपेक्षाकृत अंधेरी रहती है और खड़े ट्रेलर के पीछे कोई उचित चेतावनी चिन्ह नहीं दिख रहा था, जिसके कारण दुर्घटना की आशंका और बढ़ गई। टक्कर के बाद कार इतनी बुरी तरह फंस गई कि उसे बाहर निकालने के लिए पुलिस और ग्रामीणों को गैस कटर तक मंगवाना पड़ा। दुलदुला थाना प्रभारी के.के. साहू ने बताया कि दुर्घटना में मारे गए सभी युवक जशपुर जिले के चराईडांड़ इलाके के रहने वाले बताए जा रहे हैं। पुलिस ने उनके परिजनों से संपर्क शुरू कर दिया है और शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है।

मौके की स्थिति देखने के बाद पुलिस यह भी जांच कर रही है कि हाईवे पर ट्रेलर कितने समय से खड़ा था और क्या उसके पीछे सुरक्षा संकेत लगाए गए थे या नहीं। हादसे की खबर जैसे ही चराईडांड़ पहुंची, पूरे इलाके में मातम छा गया। मृतक युवकों के परिवारों के घरों में चीख-पुकार मच गई। स्थानीय निवासियों ने हाईवे पर रात के समय खड़े भारी वाहनों पर सख्त कार्रवाई की मांग उठाई है। उनका कहना है कि ऐसे हादसे लगातार हो रहे हैं और अगर समय रहते नियमों का पालन कराया जाए, तो कई परिवारों की जिंदगियां बच सकती हैं। इस दर्दनाक दुर्घटना ने एक बार फिर हाईवे सुरक्षा व्यवस्थाओं पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है, साथ ही यह भी याद दिलाया है कि सड़क पर एक छोटी-सी चूक कभी-कभार जीवन का सबसे बड़ा मूल्य वसूल सकती है।

छह दिन की उथल–पुथल के बाद इंडिगो की उड़ानें पटरी पर, 610 करोड़ का रिफंड और 3,000 बैग लौटाए गए

(जीएनएस)। नई दिल्ली। लगातार छह दिनों तक देशभर में हजारों यात्रियों को परेशान करने वाली इंडिगो एयरलाइंस की तकनीकी और परिचालन संबंधी अड़चनें अब धीरे-धीरे खत्म होती दिख रही हैं। नागरिक उड्डयन मंत्रालय (MoCA) ने रविवार को बताया कि एयरलाइन ने अब तक यात्रियों को 610 करोड़ रुपये से अधिक की रिफंड राशि लौटाई है और गुम हुए करीब तीन हजार बैग उनके मालिकों तक पहुंचा दिए गए हैं। यह कदम उन लाखों यात्रियों को राहत देने वाला है, जो बीते सप्ताह अचानक हुए बड़े पैमाने पर फ्लाइट रद्दीकरण से प्रभावित हुए थे।

छह दिनों से इंडिगो का नेटवर्क लगभग अस्त-व्यस्त था। स्टाफ की कमी, तकनीकी गड़बड़ियां और कई सेक्टरों में अचानक आई ऑपरेशनल बाधाओं ने एयरलाइन की सेवाओं को बुरी तरह प्रभावित कर दिया। लेकिन रविवार को स्थिति कुछ हद तक सामान्य दिखी, जब

1,650 से अधिक उड़ानें संचालित की गईं। शनिवार को यह संख्या 1,500 से ज्यादा थी। एयरलाइन ने दावा किया है कि उसके 138 में से 137 डेस्टिनेशन पर उड़ान सेवाएं फिर से शुरू हो चुकी हैं।

कंपनी का कहना है कि ऑन-टाइम परफॉर्मेंस (OTP) जो शनिवार को मात्र 30% थी, अब बढ़कर 75% तक पहुंचने की उम्मीद है। सीईओ पीटर एल्बर्स ने एक वीडियो संदेश में कर्मचारियों से कहा कि फंसे हुए यात्रियों को प्राथमिकता देते हुए एयरलाइन पूरी क्षमता से नेटवर्क को स्थिर करने में लगी है और दस दिसंबर तक संचालन को पूरी तरह सामान्य करने का लक्ष्य रखा गया है।

इस बीच नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने नागरिक उड्डयन मंत्रालय और सभी एयरपोर्ट प्राधिकरणों को रियल-टाइम मॉनिटरिंग बढ़ाने, एयरलाइन ऑपरेटरों व ग्राउंड-हैंडलिंग एजेंसियों के साथ लगातार बैठकें करने और विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों व दिव्यांग यात्रियों को बिना परेशानी सफर कराने के निर्देश दिए हैं। मंत्रालय ने स्पष्ट आदेश दिया है कि रद्द या देरी वाली उड़ानों के सभी रिफंड तुरंत जारी किए जाएं और शिकायतों के निपटारे में किसी भी तरह की देरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

पिछले कुछ दिनों में स्थिति इतनी बिगड़ गई थी कि पांच दिसंबर को 1,000, छह दिसंबर को 850 और सात दिसंबर को 650 उड़ानें रद्द करनी पड़ी थीं। भारी संख्या में यात्रियों के एयरपोर्ट पर फंसने और सोशल मीडिया पर शिकायतों की बाढ़ आने के बाद सरकार को दखल देना पड़ा।

एयरलाइन का कहना है कि हालात अब सामान्य की ओर हैं और ऑपरेशनल टीमों को अतिरिक्त स्टाफ व संसाधनों के साथ तैनात कर दिया गया है। इंडिगो ने आश्वासन दिया है कि ऐसे संकट दोबारा न हों, इसके लिए दीर्घकालिक सुधारात्मक उपाय जारी रहेंगे।

कूनो से भटककर हाईवे पर पहुंचे दो चीतों में एक की मौत, तेज रफ्तार वाहन ने कुचला

(जीएनएस)। ग्वालियर। मध्य प्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान के दो युवा चीते रविवार तड़के जंगल से बाहर निकलकर आगरा–मुंबई नेशनल हाईवे पर पहुंच गए, जहां एक मादा चीता सड़क दुर्घटना का शिकार हो गई। घाटीगांव क्षेत्र के सिमरिया मोड़ पर तेज रफ्तार से गुजर रहे एक अज्ञात वाहन ने करीब पांच बजे शावक केजीबी–3 को टक्कर मार दी। जोरदार टक्कर से चीता सड़क किनारे जा गिरा और उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

घटना की सूचना मिलते ही घाटीगांव पुलिस और वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची। घटनास्थल को तुरंत सील कर भीड़ को दूर रखा गया ताकि वन्यजीव संरक्षण से संबंधित प्रक्रिया सुरक्षित पूरी की जा सके। मृत चीते के शव को पोस्टमार्टम के लिए कूनो राष्ट्रीय उद्यान भेजा गया है। वहीं, घटना के समय उसके साथ मौजूद दूसरे शावक केजीबी–4 की खोजबीन तेज कर दी गई है, क्योंकि दोनों पिछले कई दिनों से कूनो पार्क की सीमा से बाहर घाटीगांव के जंगलों में देखे जा रहे थे। वन विभाग के अनुसार मृत मादा चीता, गामिनी नामक एक वयस्क मादा की संतान थी और दोनों शावक सैटेलाइट कॉलर की मदद से लगातार ट्रैक किए जा रहे थे। शनिवार रात इन दोनों ने सिमरिया गांव में एक गाय पर हमला भी किया था। लेकिन रविवार तड़के सड़क पार करते समय तेज रफ्तार वाहन ने उन्हें खतरे में डाल दिया। एसडीओपी शेखर दुबे ने बताया कि वाहन की रफ्तार इतनी अधिक थी कि टक्कर लगते ही चीता उछलकर दूर जा गिरा। घटनास्थल पर खून के कई निशान मिले हैं। पुलिस वाहन चालक की तलाश कर रही है और इलाके के सीसीटीवी फुटेज भी खंगाले जा रहे हैं।

चिंता की बात यह है कि यह कूनो में 48 घंटे के भीतर चीते की दूसरी मौत है। इससे पहले शुक्रवार को मादा चीता वीरा के एक शावक का शव जंगल में मिला था। लगातार हो रही इन घटनाओं ने कूनो में चीतों की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। ताजा मौत के बाद पार्क में चीतों की कुल संख्या घटकर 27 रह गई है—8 वयस्क और 19 भारत में जन्मे शावक। पार्क प्रबंधन ने बताया कि फिलहाल बाकी सभी चीते स्वस्थ हैं, लेकिन सुरक्षा और निगरानी बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है।

यह घटना न केवल वन्यजीव संरक्षण के प्रयासों पर प्रश्नचिन्ह लगाती है, बल्कि हाईवे के पास वन्यजीव मूवमेंट की बढ़ती गतिविधि के प्रति सावधानी बढ़ाने की भी जरूरत दिखाती है। वन विभाग अब इन क्षेत्रों में विशेष पेट्रोलिंग और जागरूकता बढ़ाने की योजना पर काम कर रहा है, ताकि ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

श्रीलंका में चक्रवात दित्वा का कहर, मौत का आंकड़ा 618 के पार,लगातार बारिश से तबाही, पहाड़ी क्षेत्रों में नए भूस्खलन का खतरा

(जीएनएस)। कोलंबो। चक्रवात दित्वा की तबाही झेल चुके श्रीलंका में हालात संभलने का नाम नहीं ले रहे हैं। भारी बारिश रुक-रुककर अब भी जारी है, जिससे रविवार को देशभर में भूस्खलन का नया अलर्ट जारी किया गया। पिछले सप्ताह समुद्र तट से टकराए इस चक्रवात ने श्रीलंका के पहाड़ी, मैदानी और समुद्री इलाकों में ऐसी विनाशलीला मचाई, जिसकी भरपाई में महीनों नहीं बल्कि साल लग सकते हैं। मरने वालों की संख्या 618 से ऊपर पहुंच चुकी है और अफसरों का कहना है कि मलबे में अब भी कुछ शव दबे हो सकते हैं, इसलिए संख्या और बढ़ने की आशंका है।

तबाही का पैमाना इतना बड़ा है कि देश का लगभग 10% हिस्सा सीधी चपेट में आया। डिजास्टर मैनेजमेंट सेंटर (DMC) का कहना है कि 20 लाख से अधिक लोग इस आपदा से प्रभावित हैं। पहाड़ी मध्य क्षेत्र सबसे ज्यादा तबाह हुआ है, जहां अकेले 464 मौतें दर्ज की गईं। कई गांवों की जमीन खिसककर नीचे आ गई और दर्जनों घर मिट्टी में समा गए। देशभर में लगभग 75 हजार घरों को नुकसान हुआ है, जिनमें से करीब 5,000 घर पूरी तरह समाप्त हो गए। भारी बारिश और भूस्खलन के बीच अब भी 209 लोग लापता माने जा रहे हैं, जिनकी तलाश

सैन्य दलों द्वारा जारी है।

बारिश के कारण पहाड़ियों की मिट्टी इतनी कमजोर हो चुकी है कि किसी भी समय नए भूस्खलन का खतरा बना हुआ है। सेना के हेलिकॉप्टर, एयरफोर्स के विमान और बचाव टीम लगातार दूरदराज के इलाकों तक राहत के पैकेट और दवाएं पहुंचा रहे हैं। कई समुदायों का संपर्क देश के बाकी हिस्सों से पूरी तरह टूट चुका है। राहत शिविरों में रह रहे लोगों की संख्या फिलहाल एक लाख के करीब रह गई है, क्योंकि कुछ जगह पानी उतरना शुरू हुआ है, लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि मौसम की मौजूदा स्थिति को देखते हुए खतरा अभी टला नहीं है।

तबाही सिर्फ जनहानि तक सीमित नहीं, बल्कि आर्थिक मोर्चे पर भी श्रीलंका को भारी झटका लगा है। सरकार ने घरों, दुकानों और बुनियादी ढांचे की मरम्मत के लिए बड़े पुनर्निर्माण पैकेज का ऐलान किया है। शुरुआती अनुमान बताते हैं कि पुनर्वास और पुनर्निर्माण पर 7 अरब डॉलर तक का खर्च आ सकता है। देश पहले ही आर्थिक संकट से जूझ रहा था, ऐसे में यह तूफान बजट पर भारी बोझ डालने वाला है। IMF ने 200 मिलियन डॉलर की अतिरिक्त सहायता पर विचार शुरू कर दिया है, जो उसके मौजूदा पैकेज से अलग होगी। राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके ने संसद में कहा कि अंतरराष्ट्रीय समर्थन के बिना इतनी बड़ी आपदा से उबरना संभव नहीं होगा।

दित्वा का प्रकोप सिर्फ श्रीलंका तक सीमित नहीं रहा। पिछले दो हफ्तों में दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के कई देशों—इंडोनेशिया, मलेशिया, थाईलैंड और वियतनाम—भी तूफानों, बारिश और बाढ़ की चपेट में आए हैं। कुल मिलाकर इन क्षेत्रों में 1,812 लोगों की जान जा चुकी है। इंडोनेशिया के अचेह प्रांत में स्थिति सबसे बुरी बताई गई, जहां 916 लोगों की मौत हुई और 274 अब भी लापता हैं। इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो जब राहत कार्य का जायजा लेने पहुंचे तो कुछ लोगों ने उन पर "डिजास्टर टूरिज्म" करने का आरोप लगाया और जमीन पर वास्तविक सहायता की मांग की।

क्षेत्र में अभी भी मौसम का मिजाज खराब बना हुआ है और विशेषज्ञों का कहना है कि समुद्र के तापमान में वृद्धि के कारण ऐसे चक्रवात और भी शक्तिशाली और तेजी से बनने लगे हैं। फिलहाल श्रीलंका और उसके पड़ोसी देशों के सामने सबसे बड़ी चुनौती है—जीवित बचे लोगों को सुरक्षित रखना, उन्हें भोजन, पानी और इलाज उपलब्ध कराना और धीरे-धीरे बर्बाद हो चुके गांवों को फिर से खड़ा करना।